राष्ट्रीय छात्रशक्ति

वर्ष 3 ■ अंक 07 ■ अक्टूबर-नवंबर 2019 ■ ₹10 ■ पृष्ठ 44

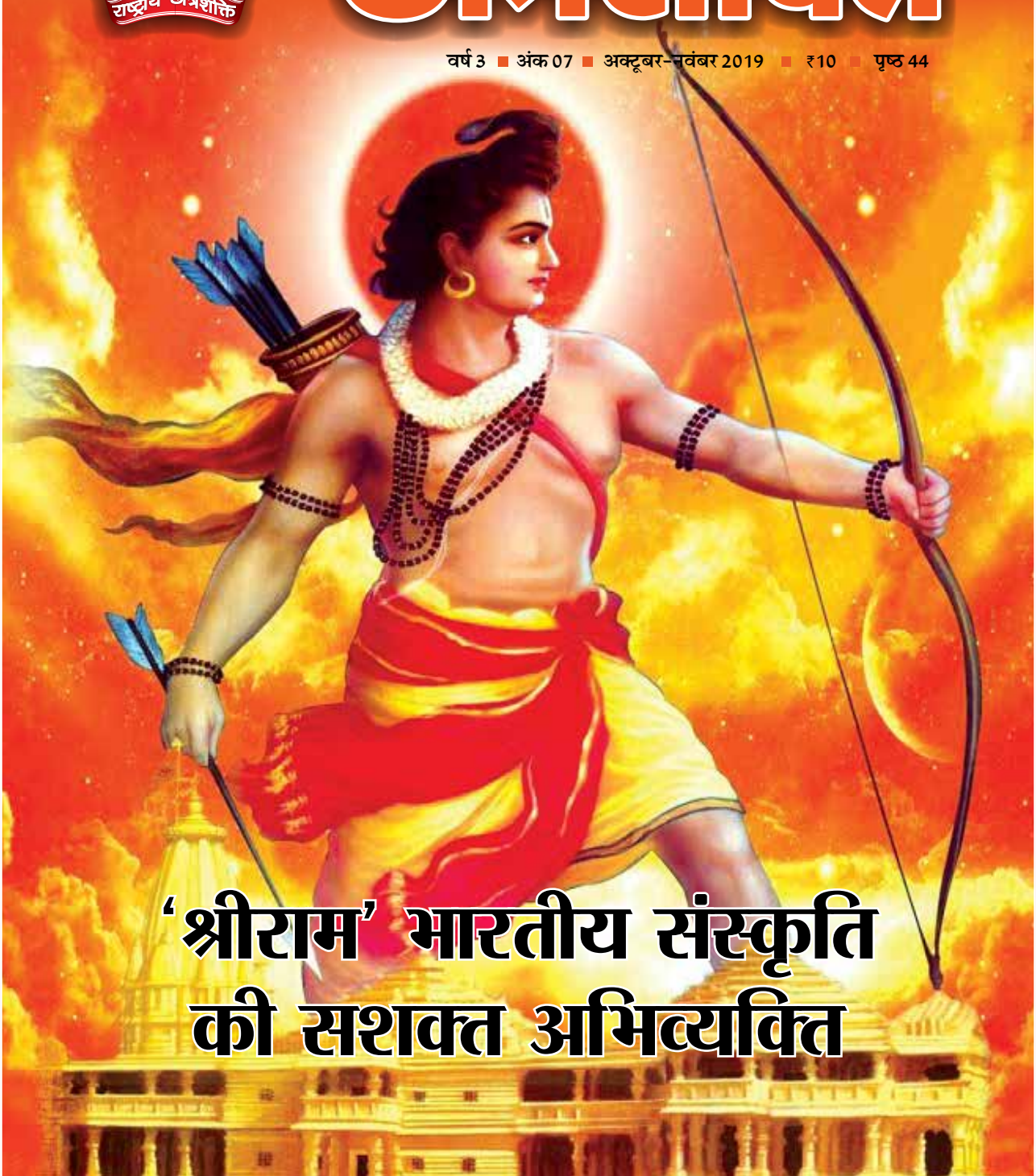

'श्रीराम' भारतीय संस्कृति की सशक्त अभिव्यक्ति

छात्रसंघ चुनाव

डूसू में जीत के बाद खुशी का इजहार करते नवनिर्वाचित छात्रनेता और अभाविप कार्यकर्ता

रांची विश्वविद्यालय छात्रसंघ चुनाव में निर्विरोध जीत के बाद प्रमाण पत्र के साथ नवनिर्वाचित छात्र नेता, साथ में हैं अभाविप पदाधिकारी

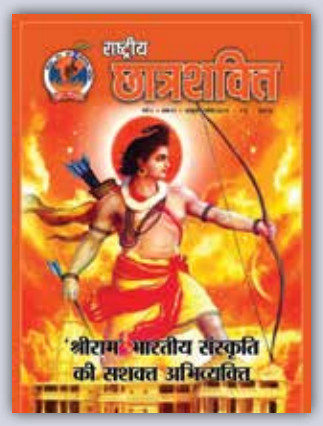

राष्ट्रीय
छात्रशक्ति
शिक्षा–क्षेत्र की प्रतिनिधि–पत्रिका

वर्ष 3, अंक 07
अक्टूबर–नवंबर, 2019

संपादक
आशुतोष भटनागर
संपादक–मण्डल :
संजीव कुमार सिन्हा
अवनीश सिंह
अभिषेक रंजन
अजीत कुमार सिंह

संपादकीय पत्राचार :
राष्ट्रीय छात्रशक्ति
26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नयी दिल्ली - 110002.
फोन : 011-23216298
www.chhatrashakti.in
rashtriyachhatrashakti@gmail.com
www.facebook.com/rashtriyachhatrashakti
www.twitter.com/chhatrashakti1

स्वामी, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक **राजकुमार शर्मा** द्वारा 26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, आई.टी.ओ. के निकट, नयी दिल्ली - 110002 से प्रकाशित एवं ओशियन ट्रेडिंग कं., 132 एफ. आई. ई., पटपड़गंज इण्डस्ट्रियल एरिया, नयी दिल्ली-110092 से मुद्रीत।

इस अंक में

05 'श्रीराम' भारतीय संस्कृति की सशक्त अभिव्यक्ति

किसी भी राष्ट्र का अस्तित्व और अस्मिता, स्वत्व और स्वाभिमान उस देश के श्रद्धा व आस्था केन्द्रों, महापुरुषों के स्मृतिस्थलों...

संपादकीय	04
साक्षात्कार / देश के अंदर न्यायालय के फैसले को हार और जीत के रूप में न लिया जाय : चंपत राय	08
श्रीराम जन्मभूमि पर अभाविप के 36 वें राष्ट्रीय अधिवेशन में पारित प्रस्ताव	10
श्रीराम जन्मभूमि पर अभाविप के 56 वें रा. अधिवेशन में पारित प्रस्ताव	13
DR. S. SUBBIAH REELECTED AS PRESIDENT AND SUSHRI TRIPATHI ELECTED AS GENERAL SECRETARY OF ABVP	14
सागर रेड्डी को मिला वर्ष 2019 का प्रा. यशवंत राव केलकर युवा पुरस्कार	15
ABVP SHILLONG ORGANISED U TIROT SING BEST STUDENT AWARD	16
आध्यात्मिक साधना के वाहक गुरु नानक देव जी	17
GURU NANAK DEV JI AND HIS SACRED MESSAGE FOR HUMANITY	21
प्रकृति के प्रति आदर का भाव जनजातीय समुदाय में होता है : सुनील आंबेकर	23
BANGLURU : ABVP RUNS CAMPUS 2 COMMUNITY CAMPAIGN	24
स्त्री शक्ति: भारतीय समाज का मूल स्वरूप	25
विकासार्थ विद्यार्थी ने स्वच्छता प्रहरियों को किया सम्मानित	26
छात्र संघ का चुनाव, नोटा और अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद्	27
रांची विश्वविद्यालय छात्रसंघ के सभी पदों पर अभाविप की जीत	28
दिल्ली विश्वविद्यालय में फिर से लहराया भगवा	29
आरएसएस के दुर्लभ अंदरूनी सूत्र के दृश्य को प्रस्तुत करता है "द आरएसएस : रोडमैप्स फॉर 21 सेंचुरी"	30
'द आरएसएस: रोडमैप्स फॉर 21 सेंचुरी' पुस्तक पढ़ने से संघ के बारे में कोई गलतफहमी नहीं रहेगी: भागवत	32
जम्मू-कश्मीर का प्रश्न और बाबा साहेब डॉ. भीम राव आंबेडकर	33
ABVP'S HISTORIC STUDENTS' RIGHT–RALLY IN TRIPURA	36
प्रा. यशवंतराव केलकर युवा पुरस्कार सूची	37
पटना में आयोजित शोध कार्यशाला सम्पन्न	38
अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं महामंत्री की सूची	39
परिचर्चा / छात्र आंदोलनों में हिंसा की स्वीकृति उचित है क्या?	41

वैधानिक सूचना : राष्टीय छात्रशक्ति में प्रकाशित लेख एवं विचार तथा रचनाओं में व्यक्त दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं। संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। समस्त प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा।

संपादकीय

अयोध्या मामले पर आये ऐतिहासिक फैसले के बाद देश में समन्वय और सौहार्द्र का नया अध्याय प्रारंभ हुआ। 491 वर्ष पुराने संघर्ष और 1949 से जारी संवैधानिक वाद और उसके चलते बार-बार उठने वाले साम्प्रदायिक वैमनस्य पर भी अब पूर्णविराम लग जाना चाहिये।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक श्री मोहनराव भागवत ने इस ऐतिहासिक अवसर पर शांति बनाये रखने और विवाद से बचने का आग्रह किया। हर्ष का विषय है कि समाज ने इस चिंतन के साथ न केवल वाणी से अपितु व्यवहार से भी अपना समर्थन व्यक्त किया।

प्रधानमंत्री मोदी सहित तमाम महत्वपूर्ण व्यक्तियों और मुस्लिम धर्मगुरुओं ने भी ऐसी ही अपील की है। विवादित ढ़ांचे के ढ़हने के बाद से अब तक प्रतिरोध के अनेक पड़ावों को पार करते हुए हिन्दू और मुस्लिम नेतृत्व ने परिपक्वता की ओर कदम बढ़ाये हैं। 40 दिन तक निरंतर चली सुनवाई के दौरान और उसके बाद भी अराजक तत्वों को अवसर नहीं मिला यह इसका प्रमाण है।

यह तथ्य समाज की स्मृति से कभी नहीं गया कि श्रीराम भारत की अस्मिता के प्रतीक हैं और उनकी जन्मभूमि पर बने मंदिर का ध्वंस कर उसके ही मलवे से एक कथित मस्जिद का निर्माण किया गया। दुनिया भर में ऐसे उदाहरण भरे पड़े हैं जहाँ विजेताओं ने पराजित राष्ट्र को अपमानित करने के लिये उनके मानबिन्दुओं को तोड़ा, अपमानित किया। भारतीय भूमि पर विजय के प्रतीक के रूप में रामजन्मभूमि सहित अनेक ऐसे मानबिन्दुओं के ध्वंसावशेष इसके साक्षी हैं।

बाबर हमलावर था, यह स्वीकार करने में किसी को आपत्ति नहीं होनी चाहिये। केवल मुस्लिम होने के कारण उसके बर्बर कृत्यों का समर्थन साम्प्रदायिक दुराग्रह से अधिक कुछ नहीं। किन्तु इस स्थिति से भी देश को गुजरना पड़ा इस सत्य को भी स्वीकार करना होगा। इसी के चलते न कभी निर्वाचित सरकारों ने इस पर निर्णय लेने का साहस दिखाया और न ही न्यायपालिका ने समाधान के लिये इतना निर्णायक कदम उठाया। आज दशकों के अनुभव और परिपक्वता का स्तर प्राप्त करने के बाद देश का बुद्धिजीवी वर्ग इन दुराग्रहों से ऊपर उठ कर समन्वय के प्रयास में है, यह स्वागत योग्य है।

जफरयाब जिलानी आदि कुछ विघ्नसंतोषी लोग सौहार्द्र की इस स्थिति को बिगाड़ने की कोशिश में हैं। वे सर्वोच्च न्यायालय के विरुद्ध पुनर्विचार याचिका दाखिल करने के साथ ही समाज के एक हिस्से में तनाव उत्तपन्न करने की कोशिश कर रहे हैं। यह संतोषपूर्ण है कि उन्हीं के समाज में से अनेक लोग उनके इस विचार के विरुद्ध खुल कर असहमति व्यक्त कर रहे हैं। ऐसा ही वातावरण तब देखने में आया जब संसद ने अनुच्छेद 370 को संशोधित कर जम्मू कश्मीर में भारत का संविधान लागू किया। शांति की समर्थक इन शक्तियों का समाज के विभिन्न वर्गों में उठ खड़ा होना सुखद भविष्य की आशा जगाता है। अंततः यह प्रवृत्ति राष्ट्रीय एकात्मता की पुष्टि करेगी।

राष्ट्रीय एकात्मता ही वह प्रस्थान बिंदु था जिसे लेकर देश की राष्ट्रवादी शक्तियों ने श्री राम को भारतीय अस्मिता के प्रतीक के रूप में आगे रख कर मंदिर निर्माण का संकल्प किया था। अभाविप इस अभियान में पूरी शक्ति से भागीदार बनी थी। आज अपने इस संकल्प का एक महत्वपूर्ण पड़ाव पार करने के अवसर पर वे समस्त कार्यकर्ता, जिन्होंने इस यज्ञ में अपनी आहुति दी, स्वाभाविक ही कृतार्थता का अनुभव कर रहे हैं।

राष्ट्रीय अधिवेशन, युवा दिवस, लोहड़ी और मकर संक्रांति की हार्दिक मंगलकामनाओं सहित,

आपका

संपादक

'श्रीराम' भारतीय संस्कृति की सशक्त अभिव्यक्ति

| अवनीश सिंह राजपूत |

किसी भी राष्ट्र का अस्तित्व और अस्मिता, स्वत्व और स्वाभिमान उस देश के श्रद्धा व आस्था केन्द्रों, महापुरुषों के स्मृतिस्थलों तथा सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण व संवर्धन पर निर्भर करता है। यह इतिहास का एक कड़वा सच है कि बर्बर विदेशी आक्रान्ताओं ने हमारे हजारों श्रद्धा, पुण्य और प्रेरणा केन्द्रों को ध्वस्त कर राष्ट्रीय स्वाभिमान को आहत करने का दुस्साहस किया था। यह विदेशी आक्रमणकारी भारत की अस्मिता को दर्शाने वाले इन श्रद्धाकेन्दों को नष्ट करके समाज के विश्वास, श्रद्धा व मनोबल को तोड़ने का प्रयास करते थे। वे सम्पत्ति की लूटपाट, समाज का कत्लेआम, महिलाओं का चारित्रिक उत्पीड़न, धार्मिक ग्रंथों व ग्रंथालयों का दहन करने के साथ-साथ देवालयों को ध्वस्त कर देवी-देवताओं की मूर्तियों को खण्डित कर दिया करते थे। कुछ वर्षों पहले ही अफगानिस्तान में महात्मा बुद्ध की विशाल प्रतिमा को तोड़े जाना भी तो उसी बर्बर मानसिकता का परिचायक है। उन्होंने हिन्दुस्थान में हजारों मंदिरों को तोड़ा और फिर अपने वर्चस्व का दंभ दिखाने के लिये उन्हीं मंदिरों के स्थान पर, उन्हीं मंदिरों के मलवे से मस्जिदें खड़ी कर दीं। देश के कोने-कोने में ऐसे अनगिनत स्थान हैं। इनमें से बहुत से स्थानों पर तो इन बर्बर आक्रमणकारियों द्वारा किये गये विध्वंस के चिन्ह आज भी अयोध्या, मथुरा, काशी और सोमनाथ सहित कई स्थानों स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं। प्राचीनकाल से ही अयोध्या भारत के राष्ट्र-जीवन की चेतना-स्थली रही है। वैदिक काल से लेकर रामायण काल तक भारत की राजधानी रही अयोध्या समस्त विश्व के लिए आकर्षण का केन्द्र बनी रही। हिन्दू राष्ट्र की सांस्कृतिक धरोहर के ज्ञान सागर में डुबकी लगाने हेतु जहां संसार के प्रत्येक कोने से विद्वान यहां आने को आतुर रहते थे, वहीं इस राष्ट्र-

जीवन के शत्रुओं ने भी बार-बार अयोध्या को ध्वस्त करने हेतु सफल-असफल प्रयास किये। अयोध्या ने भी उपरोक्त दोनों प्रकार के यात्रियों को यथायोग्य एवं समयोचित उत्तर दिया। भारतीय संस्कृति के जिज्ञासुओ को अपना ज्ञानामृत पिला कर तृप्त पिला कर तृप्त किया और दुष्ट आक्रमणकारियों को सरयू की धूल भी चटाई। दशरथ-नन्दन राम के जन्म के उपरान्त तो अयोध्या का सम्बन्ध सम्पूर्ण चर-अचर के साथ जुड़ गया। अयोध्या ने स्वयं को सृष्टि के साथ एकरस कर लिया और संसार के प्रत्येक प्राणि के लिये स्वर्ग का द्वार बन गयी।

हिमालय की गोद में अठखेलियां खेलती हुई पुण्य-सलिला सरयु अविरल चट्टानी रास्तों को तोड़कर मैदानी क्षेत्रों को तृप्त करती बहती चली आ रही है। वैदिक काल से आज तक निरंतर चला आ रही यह पुण्य प्रवाह अपने अंक में भारत राष्ट्र के सहस्राब्दियों पुराने इतिहास को संजोए हुए है। इसी पतित पावनी नदी 'सरयू मैय्या' के किनारे मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम की क्रीड़ास्थली अयोध्या नगरी बसी है। यही राम की जन्मस्थली है। 'राम' भारतीय संस्कृति की सशक्त और चिरंतन अभिव्यक्ति है, इसलिए अयोध्या भी इस मृत्युंजय संस्कृति का एक अमिट हस्ताक्षर है। राम और अयोध्या परस्पर पर्याय है। भारत औरप भारतीय जीवन मूल्यों के गगनस्पर्शी ध्वज यदि राम है तो अयोध्या को इस ध्वज का ध्वज स्थल मान लेना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। देखा जाये तो भारत राष्ट्र के इस चेतना केन्द्र को समाप्त करने के प्रयास निरंतर चलते रहे। सर्वप्रथम तो आसुरी अत्याचारों के प्रतीक लंका के राजा रावण ने श्रीराम के पूर्वजों को परास्त करके अयोध्या को ध्वस्त और अपमानित करने का प्रयास किया। फिर ग्रीक राजा मिहिर ने अयोध्या पर आक्रमण किया। तत्पश्चात एक कुख्यात यवन लुटेरे महमूद गजनवी के भांजे सार मसूद ने इस नगरी पर आक्रमण किया। फिर तो अनेक मुस्लिम आक्रमणकारियों ने अपनी नृशंसता का नग्न नृत्य इस मोक्षदायिका नगरी पर किया। मुगल शहंशाह बाबर और औरंगजेब ने भी अपनी मजहबी आग इस नगरी पर बरसाया। भारतीय संस्कृति के उद्गम स्थल को तहस नहस करने के लिए सहस्त्रों भीषण आक्रमण, विदेशियों और विधर्मियों ने किये। उत्थान और पतन के इन झंझावातों में अयोध्या

श्री रामजन्मभूमि के संबंध में मा. सर्वोच्च न्यायालय द्वारा इस देश की जनभावना, आस्था एवं श्रद्धा को न्याय देने वाले निर्णय का राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ स्वागत करता है। दशकों तक चली लंबी न्यायिक प्रक्रिया के बाद यह विधिसम्मत अंतिम निर्णय हुआ है। इस लंबी प्रक्रिया में श्री रामजन्मभूमि से संबंधित सभी पहलुओं का बारीकी से विचार हुआ है। सभी पक्षों के द्वारा अपने-अपने दृष्टिकोण से रखे हुए तर्कों का मूल्यांकन हुआ। धैर्यपूर्वक इस दीर्घ मंथन को चलाकर सत्य व न्याय को उजागर करने वाले सभी न्यायमूर्ति तथा सभी पक्षों के अधिवक्ताओं का हम शतश: धन्यवाद व अभिनंदन करते हैं। इस लम्बे प्रयास में अनेक प्रकार से योगदान देने वाले सभी सहयोगियों व बलिदानियों का हम कृतज्ञतापूर्वक स्मरण करते हैं।

— प. पू. डा. मोहनराव भागवत
सरसंघचालक, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ)

यह एक ऐतिहासिक फैसला है । विद्यार्थी परिषद इस निर्णय का पूर्णत: स्वागत करती है । हिंदू और मुस्लिम सभी भारतवासियों को इसे सहर्ष स्वीकार करते हुए आगे बढ़ना चाहिए । अयोध्या में भगवान राम के भव्य राम मंदिर के निर्माण की प्रक्रिया को सरकार जल्द शुरू करेगी, ऐसा मुझे विश्वास है ।

— श्री आशीष चौहान, राष्ट्रीय महामंत्री
(अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद)

"पूरा देश चाहता था कि इस मामले में हर रोज़ सुनवाई हो और दशकों तक चली इस न्याय प्रकिया का अब समापन हुआ है। सर्वोच्च न्यायालय ने अयोध्या मामले पर सुनवाई के दौरान सबको धैर्य से सुना और पूरे देश के लिए ख़ुशी की बात है कि फ़ैसला सर्वसम्मति से आया है। यह कार्य सरल नहीं था। फ़ैसला आने के बाद हर वर्ग, हर धर्म ने जिस तरह फ़ैसले का स्वागत किया है वो भारत की संस्कृति को प्रतिबिंबित करता है। विविधता में एकता का मंत्र आज पूर्णता के साथ खिला हुआ नज़र आता है।"

—श्री नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

ने कभी पराभव देखा तो कभी वैभव परन्तु समाप्त नहीं हुई। वैदिक काल से लेकर आज तक का अयोध्या गौरव और पतन का इतिहास इस बात का प्रबल साक्षी है कि हिन्दू अपनी संस्कृति, अस्मिता और राष्ट्रीय मान बिन्दुओं की रक्षा के लिए किसी भी प्रकार का बलिदान देने हेतु सदैव तत्पर रहता आया है और भविष्य में भी रहेगा।

बड़ी संख्या में ऐसे भी स्मारक हैं जिनका स्थान खोजना भी अब मुश्किल होता जा रहा है। ऐसे ही हजारों स्थानों का महत्व धीरे-धीरे कम होता गया और वे स्मृति से दूर हो गये। कुछ स्थानों पर बनी मस्जिदें सचमुच इबादतगाह की तरह उपयोग होने लगीं और सहृदय हिन्दू समाज ने उनके इसी रूप को स्वीकार कर लिया। ऐसी ही एक घटना सन् 1526 में बाबर ने जब भारत पर आक्रमण किया तब घटित हुई। 1528 में बाबर के सेनापति मीर बाकी ने उसके आदेश पर अयोध्या पर आक्रमण किया। इतिहासकार कनिंघम के अनुसार 15 दिनों के घमासान युद्ध में 1 लाख 74 हजार हिन्दुओं के वीरगति प्राप्त करने के बाद ही मीर बाकी मंदिर को तोप के गोलों से गिराने में सफल हो सका। उसने रामजन्मभूमि मंदिर के मलवे से उस स्थान पर दरवेश मूसा आशिकान के निर्देश पर मस्जिद जैसा एक ढ़ांचा खड़ा कर दिया। यद्यपि यह किसी भवन के मस्जिद होने की प्रारंभिक आवश्यकताएं भी पूरी नहीं करता। अयोध्या सहित समूचे भारत के हिन्दुओं की आस्था के केन्द्र रामजन्मभूमि पर स्थित मंदिर का ध्वंस भक्तों के लिये असहनीय वेदना का कारण बन गया। इसने रामजन्मभूमि की मुक्ति के लिये संघर्ष की एक विरामहीन श्रृंखला को जन्म दिया। 1528 से 1949 तक की कालावधि में जन्मभूमि को मुक्त कराने के लिये 76 युद्ध हुए जिनमें लाखों रामभक्तों ने बलिदान दिया। इसलिए यह प्रमाणिक है कि भारत के लिये राम केवल पूजा के देव नहीं हैं। वे राष्ट्रीय अस्मिता, राष्ट्रीय गौरव, भारतभक्ति और मर्यादा के मानदंडों के अनुसार जीवन-व्यवहार करने वाले राष्ट्रपुरुष हैं, यह भारत के संविधान की प्रथम प्रति के प्रारंभ के पृष्ठों में राम का चित्र देकर भारतीय मनीषा और संविधान निर्माताओं ने भी स्वीकार किया है। ऐसी स्थिति में अपमान के कलंक को धोने, गुलामी के चिन्हों को हटाने, सांस्कृतिक गुलामी से मुक्ति पाने, आस्था-श्रद्धा व मानबिन्दुओं की रक्षा करने, भावी पीढ़ियों को प्रेरणा देने, राष्ट्र की चेतना को जगाने और राष्ट्रीय पहचान को प्रकट करने के प्रतीक के रूप में श्री रामजन्मभूमि पर मंदिर बनाया जाना अत्यंत स्वाभाविक था। समूचा राष्ट्र समवेत स्वर में इस कार्य को सम्पन्न करने के लिये एकजुट हुआ है।

दशकों एवं सदियों की धैर्यपूर्ण प्रतीक्षा के उपरांत राम जन्मभूमि का निर्णय आया। एक पक्ष की ज़िद और दूसरे पक्ष के अडिग विश्वास के मध्य से निर्णय आया जिसमें एक स्वस्थ, तथ्यपरक अनुसंधान के पश्चात सर्वोच्च न्यायालय की पाँच माननीय न्यायाधीशों की पीठ ने जन्मभूमि के पूर्ण क्षेत्र पर हिंदुओं का अधिकार माना और मंदिर निर्माण के निर्देश दिए। साथ ही सर्वोच्च न्यायालय ने मुस्लिम पक्ष को सरकार द्वारा 5 एकड़ भूमि प्रदान करने का निर्देश दिया। भारत के हिंदुओं एवं मुसलामानों के लिए यह एक तरह से धार्मिक उन्माद के रक्तरंजित इतिहास का पटाक्षेप हुआ जिसके पश्चात भारतीय के रूप में हम एक साझे भविष्य की ओर चल सकें। आशा है सर्वोच्च न्यायालय का यह निर्णय राष्ट्र को न सिर्फ अपने साझा इतिहास और संस्कृति के प्रति जागरूक करेगा, बल्कि मिथ्याभाषी समाज तोड़ने वाले बुद्धिजीवियों के प्रति भी सजग रखेगा। ■

देश के अंदर न्यायालय के फैसले को हार और जीत के रूप में न लिया जाय : चंपत राय

9 नवंबर 2019 को सर्वोच्च न्यायालय के फैसले के बाद अयोध्या में भगवान श्रीराम के जन्मस्थान पर ही भव्य मंदिर के निर्माण का रास्ता साफ हो चुका है। अयोध्या में प्रभु श्रीराम का मंदिर बनवाने के लिए कई पीढ़ियां खप गई। रामजन्मभूमि आंदोलन में वैसे अनगिनत लोगों का योगदान रहा लेकिन कुछ ऐसे व्यक्तित्व हैं जिनका नाम हमेशा चर्चा में रहा, उनमें अशोक सिंघल, आचार्य गिरिराज किशोर, कल्याण सिंह, लालकृष्ण आडवाणी, डॉ. मुरली मनोहर जोशी, चंपत राय, साध्वी ऋतंभरा, विनय कटियार और उमा भारती प्रमुख हैं। श्रीराम जन्मभूमि का यह आंदोलन सामाजिक और कानूनी दोनों मोर्चों पर लड़ा गया। विश्व हिंदू परिषद् के अंतरराष्ट्रीय उपाध्यक्ष चंपत राय की इस आंदोलन में महत्ती भूमिका रही है,जो वर्ष 1985 से हर मोर्चे पर सक्रिय रहे। राम जन्मभूमि के स्वामित्व को लेकर सर्वोच्च न्यायालय का फैसला आने के बाद चंपत राय से 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' के स. संपादक अजीत कुमार सिंह ने बातचीत की। प्रस्तुत है बातचीत के प्रमुख अंश :

आप श्रीराम जन्मभूमि पर सर्वोच्च न्यायालय के फैसले को किस रूप में देखते हैं ?

सर्वोच्च न्यायालय के पांच न्यायाधीशों की बेंच ने राममंदिर के पक्ष में जो फैसला सुनाया है। इस पर मैं कह सकता हूं कि स्वतंत्र भारत के इतिहास में हिन्दू संस्कृति, मूल्य और भावनाओं को न्यायालय ने स्वीकार किया है। मैं आंतरिक रूप से संतुष्ट हूं कि माननीय न्यायाधीशों ने पूर्ण न्याय दिया है। सर्वोच्च न्यायालय ने जो फैसला दिया है वह बातचीत के जरिये भी हल किया जा सकता था। वार्ता हमेशा विफल क्यों रही ?

मुझे नहीं पता कि मध्यस्थता का सुझाव किसने दिया और क्यों दिया ? यह अधिक गंभीर है कि पैनल के सदस्यों ने हमसे बेजोड़ सुझावों के बारे में सवाल पूछे। कोई भी समझदार व्यक्ति समाधान की पेशकश नहीं कर सकता है जो समस्याओं के पेंडोरा बॉक्स खोलता हो। लेकिन, उस पैनल ने ऐसा किया। वह वार्ता विफल होने के लिए बाध्य थी और ऐसा हुआ। इस मुद्दे पर मेरा बोलना ठीक नहीं है।

न्यायालय के फैसले से आप कितना संतुष्ट हैं ?

मैं पूरी तरह से संतुष्ट हूं। हम चाहते हैं कि देश के

अंदर इस फैसले को हार और जीत के रूप में न लें। ये राष्ट्र गौरव के सम्मान की पुनर्प्रतिष्ठा का विषय है। यह राष्ट्र सभी पंथ को मानने वालों का है। एक जिम्मेवार देश के नागरिक होने के नाते इसको स्वीकारना चाहिए कि आखिर पांच शताब्दी के बाद एक समस्या का हल सामने आ गया।

राम मंदिर आंदोलन के बारे में बताएं।

1528 में विदेशी आक्रमणकारियों के द्वारा हमारे आराध्य प्रभु श्रीराम के मंदिर को तोड़कर वहां पर मस्जिद का ढ़ांचा खड़ा कर दिया। तब से श्रीराम जन्मभूमि की मुक्ति की लड़ाई चल रही है। अयोध्या के स्थानीय रामभक्तों, पड़ोसी राजाओं और संतो के माध्यम से संघर्ष जारी रहा। 1934 में हिंदुओं के द्वारा ढ़ांचे को तोड़ा गया, देश उस समय अंग्रेजों का गुलाम था। अंग्रेजों ने इस पर दंडात्मक कार्रवाई करते हुए 84 हजार हर्जाना भरने का आदेश दिया। फैजाबाद/ अयोध्या के राजा ने सभी नागरिकों के बदले खुद ही उस हर्जाने की राशि को चुका दी। 1947 में देश आजाद हो गया। सन 1949 में दो साधुओं के नेतृत्व में 50 युवाओं की टोली ने उस पर कब्जा कर लिया और वहां पर कीर्तन करना शुरू कर दिया, जो अब तक जारी है। विश्व हिंदू परिषद् का प्रवेश 1984 में हुआ। राष्ट्रीय स्वयंसेवक के स्वयंसेवकों ने पश्चिमी उत्तर प्रदेश में हिंदू जागरण मंच नाम की संस्था बना ली। हिंदू जागरण मंच के बैनर तले 1983 में कार्यक्रम का आयोजन किया गया, उसमें उत्तर प्रदेश सरकार के पूर्व मंत्री दाऊ दयाल खन्ना और गुलजारी लाल नंदा भी पधारे। खन्ना ने अपने भाषण में हिंदुओं से आह्वान किया कि देश आजाद हुए इतने वर्ष हो गये हैं। अब अयोध्या, मथुरा और काशी को मुक्त कराना चाहिए। उनके इस बात को अशोक सिंघल जी ने समझने का प्रयास किया फिर यह तय हुआ कि इस बात को हमसे ज्यादा साधुओं को समझनी चाहिए। इसके बाद दिल्ली के विज्ञान भवन में 7-8 अप्रैल 1984 के देश भर के संतो का दो दिवसीय अधिवेशन हुआ। इसको विश्व हिंदू परिषद ने धर्म संसद नाम दिया। यहां भी दाऊ लाल खन्ना ने अपनी बात दोहराई। संतो को उनकी बात पसंद आई और यहीं से विश्व हिंदू परिषद् का राममंदिर आंदोलन में प्रवेश हुआ। धर्म संसद में ही श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति यज्ञ समिति का गठन हुआ। निर्णय हुआ कि प्रभु श्रीराम ताले के अंदर बंद हैं, उसे खोलवाना जरूरी है। आंदोलन शुरू हुए, 1985 में ताला खुलवा दिये लेकिन पूजा की तब भी मनाही थी। भगवान की इच्छा से वकील उमेश चंद्र पांडेय ने पूजा के लिए अदालत में मुकदमा दर्ज करवाया। एक फरवरी 1986 को फैजाबाद के जिला न्यायाधीश ने हिंदुओं को पूजा की इजाजत दे दी। 1989 में अध्ययन के बाद पता चला कि सारे मुकदमें व्यक्तिगत हैं। विचार - विर्मश के बाद नये मुकदमे दायर हुए। हमलोंगों अदालती और सामाजिक दोनों स्तर पर अपना काम करना शुरू कर दिया। 1989 में रामशिला पूजन की शुरूआत की गई, जिसके माध्यम से 2 लाख 75 हजार परिवारों तक सीधे पहुंच हुई। 1990 में कारसेवा की घोषणा हुई तत्कालीन मुख्यमंत्री ने कारसेवकों पर गोली चलवा दी। सत्ता परिवर्तन हुए दोबारा कारसेवा शुरू हुआ, जिसकी जिस तरह भावना थी प्रतिक्रियाएं देनी शुरू कर दी, फलस्वरूप विवादित ढ़ांचा ढह गया। मुकदमेंबाजी हुई, पहले जिला फिर हाईकोर्ट और उसके बाद सुप्रीम कोर्ट में मामला आया और आज माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने तथ्य और तर्क के आधार पर राममंदिर के पक्ष में फैसला अभूतपूर्व फैसला सुनाया जिसे सुनकर दिल गदगद है। ■

मैं पूरी तरह से संतुष्ट हूं। हम चाहते हैं कि देश के अंदर इस फैसले को हार और जीत के रूप में न लें। ये राष्ट्र गौरव के सम्मान की पुनर्प्रतिष्ठा का विषय है। यह राष्ट्र सभी पंथ को मानने वालों का है। एक जिम्मेवार देश के नागरिक होने के नाते इसको स्वीकारना चाहिए कि आखिर पांच शताब्दी के बाद एक समस्या का हल सामने आ गया।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद

36 वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन

8 - 10 फरवरी, 1991, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)

प्रस्ताव क्र. 2

श्री रामजन्मभूमि आन्दोलन एवं मानवाधिकार

वर्ष 1990 ने अनेक उतार-चढाव देखे। विशेषकर यह केन्द्र में सत्ता संघर्ष का वर्ष रहा। चाहे, अन-चाहे केन्द्र सरकार के उथल-पुथल में रामजनम भूमि प्रकरण भी जुड़ गया। पर दु:ख इस बात का है कि कुछ लोग यह साबित करना चाह रहे हैं कि रामजन्मभूमि का आन्दोलन एक राजनैतिक आन्दोलन है। 9 माह के अपने शासन काल में दो बार इस्तीफा देने का नाटक करने वाले वी.पी. सिंह अपनी असफलता को रामजन्मभूमि आन्दोलन के माथे पर मंडरा रहे हैं और यह प्रचारित कर रहे हैं कि यह आन्दोलन मंडल आयोग से समाज के पिछड़े लोगों को जो न्याय देने की योजना थी उसके खिलाफ था।

रामजानकी रथ, रामजन्मभूमि का ताला खुलाना एवं शिलान्यास ये सब आन्दोलन के प्रभावी पड़ाव रहे हैं पर आन्दोलन का इतिहास तो सैकडों वर्ष पुराना है। यह भी आरोप लगाया जा रहा है कि इस आन्दोलन के कारण देश में साम्प्रदायिक दंगे भड़के है। भारत में साम्प्रदायिक दंगों का इतिहास भी 60 वर्षो से ज्यादा पुराना है। हाँ, अगर कुछ नया है तो वह है देश की वर्तमान राजनीति द्वारा देश के स्वाभिमान से जुड़ने के बदले देश को कलंकित करने वाले चिन्हों को बनाये रखने की लालसा। सोमनाथ मंदिर के जीर्णोद्धार के गौरवपूर्ण उदाहरण से लेकर कार सेवकों पर किये गये अमानवीय अत्याचार तक की गिरावट का सफर इस बात को प्रमाणित करता है कि यह राजनैतिक व्यवस्था अल्प संख्यक तुष्टीकरण के लिए देश को गुलाम भी बना सकती है। वरना क्या कारण है कि बार-बार यह चर्चा उठ रही है कि 1947 के पहले की स्थिति बहाल की जाय? 1947 के पहले तो यह देश एक गुलाम देश था।

विकृत धर्म निरपेक्षता की राजनीति करने वाले लोगों ने अयोध्या नरसंहार के बाद जो चुप्पी लगायी है उसे इतिहास कभी क्षमा नहीं करेगा।

संविधान द्वारा प्रदत्त नागरिक अधिकारों का हनन जिस प्रकार अयोध्या के सम्पन्ध में हुआ है वह स्वतंत्र भारत के इतिहास में काले अक्षरों में लिखा जायेगा। विशेषकर उत्तर प्रदेश की मुलायम सिंह सरकार ने वी.पी. सिंह का सह्योग प्राप्त कर जो अत्याचार किये हैं उसे भुलाये भी भुलाया नहीं जा सकता।

सरकार तो अंधी एवं दिग्भ्रमित थी ही पर उसकी पिछलग्गू वामपंथी ताकतें एवं तथाकथित मानवाधिकार संगठनों की नपुंसक भूमिका ने आम लोगों को हतप्रभ कर दिया है। पंजाब, कश्मीर, आन्ध्र एवं असम में देश को तोडनेवाले अलगाववादी ताकतों के मानवाधिकार के लिए हायतोबा मचाने वाले आज अयोध्या प्रकरण पर चुप्पी साधे हुए हैं। सम्पूर्ण प्रकरण में कॉंग्रेस आई की भूमिका अवसर वादिता कर रही है।

संविधान की धारा 14, 19, 21, 22, 25 एवं 26 द्वारा प्रदत्त नागरिक अधिकारों का जिस प्रकार खुले आम हनन हुआ वह अपने आप में ही मुलायम सिंह की सरकार एवं वी.पी.सिंह को सजा देने के लिए काफी है। अक्तुबर-नवंबर 1990 के महिनों में अयोध्या एवं संपूर्ण उत्तर प्रदेश में हुए नागरिक अधिकारों के हनन की जांच हेतु परिषद का एक दल नवंबर अन्त में उत्तर प्रदेश गया था। दल ने पाया कि :-

1. समाचार पत्रों हेतु समाचार संकलन में बांधा डालने के उद्देश्य से संवाददाताओं को घटना स्थल पर जाने नही दिया गया। अनेक सम्पादकों एवं संवाददाताओं को न केवल डराया धमकाया गया बल्कि उन्हें गिरफतार कर प्रताड़ित भी किया गया। एक ओर छुपे हुए समाचार पत्रों के बंडल जब्त किए गए तथा जला डाले गये। तो दूसरी ओर सरकारी प्रचार माध्यमों से झूठे समाचार प्रसारित किये जाते रहे।

2. 144 से ऊपर रेलगाडियों को बिना कारण बताये रद्द कर दिया गया। जिसके पास टिकट था उन्हें भी बीच रास्ते में ही उतार दिया गया। पूरे उत्तरप्रदेश की सीमाओं को एक तरह से बंद कर दिया गया जिससे उत्तर प्रदेश देश के अन्य भागों से पूरी तरह कट गया।

3. लाखों लोगों को, जो कार सेवा में भाग लेने निहथे जा रहे थे, बिना कारण बताये गिरफ्तार किया गया। उत्तर प्रदेश की जेलों की क्षमता 20 हजार की है पर उसमें एक लाख से ऊपर लोगों का रख गया। गिरफ्तार लोगों को न ही किसी अदालत में पेश किया गया और न ही उनके खाने-पीने व रहने की सही व्यवस्था की गयी।

4. दो समुदायों के बीच अगर विवाद था तो सरकार को तटस्थ रहकर समस्या का समाधान खोजना चाहिए था। पर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री ने भडकाऊ भाषण दिए, अल्पसंख्यकों को उकसाया एवं शिलान्यास की छतरी काटकर एक चुनौती दी जिसके चलते शांतिपूर्ण आन्दोलन थोड़ा उग्र हो गया।

5. 40 से अधिक स्थानों पर बेवजह कर्फ्यू लगाया गया जिसके कारण आम जनता को अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ा।

6. अबाधित परिक्रमा पर अघोषित रोक लगा दी गयी जिससे हिन्दुओं की भावनाओं को ठेस पहुंची।

7. 30 अक्तुबर एवं 2 नवंबर को निहत्थे कार-सेवकों पर अन्धाधुन्धा गोलियाँ चलायीं गयी विशेषकर दो नवंबर की घटना पूर्व नियोजित थी। विवादित स्थल से 1 1/2 कि.मी. दूर ही जिस बेरहमी से गोली चलायी गयी उससे यह स्पष्ट है कि गोली भीड़ को तितर-बितर करने की दृष्टि से नहीं बल्कि जान से मारने की दृष्टि से चलायी गयी। अनेक ऐसे प्रमाण भी आज उपस्थित हैं जिसके आधार पर यह दावे के साथ कहा जा सकता है कि अर्धसैनिक बलों के अतिरिक्त कुछ बाहरी व्यक्तियों ने भी कार-सेवकों पर गोलियाँ चलायी।

इस पूरे प्रकरण का सबसे दुखद पक्ष सरकार द्वारा ही न्यायालय की अवमानना है। इलाहाबाद एवं लखनऊ उच्च-न्यायालय ने अनेक ऐसे आदेश दिये जिनकी न केवल उपेक्षा की गयी बल्कि न्यायालय के आदेश को फाड डालया गया। पुनः न्यायालय से संरक्षण प्राप्त करनेवालों को गिरफ्तार कर लिया गया।

और यह वह सरकार कर रही थी जो बार-बार न्यायालय के सम्मान की दुहाई देती है। अयोध्या के पूरे प्रकरण ने देश को झकझोर कर रख दिया है। आजादी के 40 सालों में धर्म निरपेक्षता के नाम पर बहुसंख्यक हिन्दुओं को प्रताड़ित किया जाता रहा है। साम्प्रदायिक सौहार्द के लिए नारे दिये गये पर सचमुच में सौहार्द कायम हो इसका ईमानदारी पूर्वक प्रयास नहीं किया गया। बहुसंख्यकों कों आपस में जाति, प्रांत एवं भाषा के नाम पर बाँटकर अल्पसंख्यक तुष्टीकरण की नीति को फलने फुलने दिया गया।

अगर लाखों लोगों ने कार-सेवा हेतु यातनाएं सहीं, करोडो लोगों ने आडवाणी जी की रथ-यात्रा का स्वागत किया और हजारों प्रतिदिन सत्याग्रह करते रहे तो इसको राजनैतिक चश्में से देखने के बदले लागों की जनभावनाओं को समझने की आवश्यकता है।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, का यह 36 वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन माँग करता है कि देश में जो विकृत धर्म निरपेक्षता चलायी जा रही है उसे तत्काल बंद किया जाए। धर्म-निरपेक्षता एवं मानवाधिकार का चोला पहन कर बहुसंख्यकों को जो अपमानित किया जाता रहा है उसे तत्काल बंद किया जाए। अयोध्या का आन्दोलन एक जन-आन्दोलन है अत: विषय की गम्भीरता को देखते हुए यह अधिवेशन मांग करता है कि :-

1. राम जन्म भूमि सम्मान सहित हिन्दुओं को लौटाई जाए।
2. 30अक्तुबर एवं 2 नवंबर की घटनाओं की जाँच किसी वर्तमान उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश से कराई जाय। सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश में मानवाधिकार का हनन हुआ है उसकी जाँच हो। दोषी तत्वों को दंडित किया जाये। जांच निष्पक्ष हो सके अत: सम्बन्धित अधिकारियों को जांच पूरा होने तक उनके कार्यभार से उन्हें मुक्त कर दिया जाये।
3. उत्तर प्रदेश की मुलायम सिंह की सरकार को बरखास्त किया जाये। अयोध्या आन्दोलन से सम्बन्धित सभी झूठे मुकदमें उठा लिये जाए।
4. अल्प संख्यक आयोग के बदले मानवाधिकार आयोग का गठन किया जाये।
5. संविधान की धारा 30 के तहत शिक्षा का साम्प्रदायिकीकरण पहले ही किया गया था अब पुलिस एवं सेना का भी साम्प्रदायिकीकरण का प्रयास चल रहा है, इसे तत्काल रोका जाये।
6. जिस प्रकार से योजनाबद्ध तरीके से साम्प्रदायिक दंगे हुए और उसमें विदेशी हथियार उपयोग में लाये गये उसकी जांच की जाये। तथा जाँच के निष्कर्ष को सार्वजनिक किया जाय।

यह अधिवेशन यह भी घोषणा करता है कि अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद रामजन्मभूमि हेतु चलाये जा रहे जन-आन्दोलन का भरपूर समर्थन करेगा तथा अयोध्या के सम्बन्ध में जिन मानवीय अधिकारों का हनन हुआ है उससे देश की जनता को अवगत करायेगा।

यह अधिवेशन मुस्लिम भाईयों से भी अपील करता है कि वे रामजन्मभूमि हिन्दुओं को सौंप कर एक नये युग की शुरुआत करें। समय का तराजा है कि राष्ट्रवादी मुसलमान आगे आकर मुस्लिम समाज को राष्ट्र की मुख्य धारा में जोड़ने का काम करे।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद

56 वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन

25 - 28 दिसम्बर 2010, बेंगलुरु (कर्नाटक)

प्रस्ताव क्र. 4

श्री राम जन्मभूमि मंदिर निर्माण के संकल्प का पुनरुच्चार

इलाहाबाद उच्च न्यायालय की लखनउ खण्डपीठ द्वारा अयोध्या में रामजन्म भूमि को न्यायिक निर्णय के द्वारा स्वीकृति प्रदान करने तथा श्री रामलला विराजमान को उस भूमि का स्वामी घोषित किये जाने के ऐतिहासिक निर्णय का अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का यह 56 वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन स्वागत करता है। किन्तु श्री रामलला विराजमान की भूमि को विभाजन करने के लिये आये बहुमत के निर्णय को पीड़ाकारी भी मानता है। पुरातात्विक साक्ष्यों, अभिलेखीय प्रमाणों तथा कोटि-कोटि जन की आस्था से प्रमाणित श्री रामजन्म भूमि पर न्यायालय द्वारा इससे अधिक स्पष्ट निर्णय की अपेक्षा थी।

उच्च न्यायालय के निर्णय के बाद एक ऐसा ऐतिहासिक अवसर उपस्थित हुआ था कि इस देश के सभी लोग (हिन्दू, मुसलमान) मिलकर मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम का भव्य मंदिर निर्माण कर राष्ट्रीय अस्मिता के गौरव को पुनर्स्थापित करते, किन्तु सुन्नी वक्फ बोर्ड, बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी और कुछ तथाकथित वोट बैंक परस्त राजनीतिज्ञों ने इस ऐतिहासिक संभावना को धूमिल कर दिया है। यद्यपि कि उच्च न्यायालय के निर्णय के बाद यह स्पष्ट हो गया है कि रामजन्म भूमि निर्विवाद रुप से श्रीराम का जन्म स्थान है और इस नाते से भगवान श्रीराम में आस्था रखने वाले जन-जन की पूजा उपासना का पवित्र स्थल भी है, न्यायालय ने स्वयं अपने निर्णय में यह स्वीकार किया है कि श्री रामलला विराजमान के विग्रह वाला स्थान सदैव रामजन्म भूमि मंदिर का ही रहेगा और इसके स्वामी स्वयं श्री रामलला हैं, किन्तु इस छोटे से भूखंड के विभाजन के समझौतावादी निर्णय ने भव्य राम मंदिर निर्माण में अल्पकालिक बाधा खड़ी कर दी है, न्यायालय द्वारा निर्मोही अखाड़ा तथा सुन्नी वक्फ बोर्ड एवं अन्य मुस्लिमों का वाद निरस्त कर आश्चर्यजनक रुप से श्री रामलला की जन्मभूमि का हिन्दू, मुसलमान एवं निर्मोही अखाड़ा के बीच विभाजन स्वीकार कर, इस निर्णय ने सर्व सुखकारी अंत को प्राप्त हो रहे ऐतिहासिक मुकदमें को और लंबा करने के लिये जगह बना दी है।

उच्च न्यायालय द्वारा निर्णय सुनाये जाने से पूर्व तक सभी पक्ष यह घोषित कर रहे थे कि इस प्रकरण पर न्यायालय का निर्णय सबको स्वीकार करना चाहिये, किंतु श्री रामलला के पक्ष में निर्णय आने के साथ ही ये लोग न्यायिक पुनर्रीक्षण के अधिकार की दुहाई देकर सर्वोच्च न्यायालय में जाने की तैयारी में जुटे गये है, जो यह सिद्ध करने के लिये पर्याप्त है कि कुछ राजनैतिक दल इस देश में राष्ट्रीय स्वाभिमान के किसी भी बिन्दु को जीतता हुआ नहीं देख सकते है, उच्चतम न्यायालय में जाने का उद्देश्य इस विषय पर न्याय प्राप्त करना नहीं है क्योंकि यह अकाट्य एवं प्रमाणित तथ्य है कि उक्त स्थल ही श्रीराम की जन्मस्थली है उस पर श्रीराम के उपासकों का ही अधिकार है।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का यह राष्ट्रीय अधिवेशन अयोध्या में श्रीराम मंदिर निर्माण के अपने पुराने संकल्प को फिर से व्यक्त करते हुए पुनरोच्चारित करता है कि अयोध्या में जन्म स्थान पर मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का भव्य मंदिर बनाना राष्ट्रीय गौरव की पुनर्स्थापना है, इसमें बाधा उत्पन्न करने की प्रत्येक कोशिश राष्ट्र विरोधी कृत्य है। परिषद का समस्त राष्ट्रवासियों से यह आह्वान है कि इस पुनीत राष्ट्र कार्य में बाधा खड़ी करने वालों को कठोर प्रत्युत्तर दें, साथ ही साथ यह राष्ट्रीय अधिवेशन केन्द्र सरकार से यह मांग करता है कि सरकार द्वारा अधिग्रहित 67 एकड़ भूमि तत्काल राम मंदिर निर्माण के लिये वापस दी जाये।

1

56 राष्ट्रीय अधिवेशन, प्रस्ताव क्र. 4

Dr. S. Subbiah reelected as President and Sushri Tripathi elected as General Secretary of ABVP

Dr. S. Subbiah (Chennai) and SushriNidhiTripathi (Delhi) have been elected unopposed as National President and National General Secretary respectively of nation's leading student organization AkhilBharatiyaVidyarthiParishad for the year 2019-20.This announcement was made today from the Central Office of ABVP at Mumbai.

According to the statement issued by the Election Officer Dr D..K. Shahi from the Central Office of ABVP, the tenure of both the posts will be of one year, and both the office bearers will assume their responsibility during the 65th National Conference of ABVP scheduled to be held in Agra (Braj) from 22nd to 25th November 20I9 .

Dr S.Subbiah

Sushri Tripathi

Prof Dr S Subbiah hails from the Thoothukudi district in Tamilnadu.He has been an activist of ABVP since his student days.A reputed cancer specialist in medical field, he has done MBBS MS and MCh (Surgical Oncology) .At present, he is a Professor and Head of the Department of Surgical Oncology at Chennai's Kilpauk Medical College.So far, he has performed more than 3000 surgeries, published more than 65 research papers in national and international medical journals and guided more than 50 students for super-specialty in Surgical Oncology.He is an honorary member of various national institutions for cancer studies and research. Right since student days he is inclined to serving Society through medical practice. He takes keen Interest In development of education In Tamil Nadu and Tamil history. Cultural Nationalism is his subject of special interest.Since I986, he has held various responsibilities in ABVP such as Tamil Nadu State President and National VicePresident. He has been reelected as the National President of ABVP for this session (2019-20) .He resides in Chennai.

SushriNidhiTripathi hails from Pratapgarh district of Uttar Pradesh.She has done BA from Allahabad University and MA MPhil from Jawaharlal Nehru University.She continues to pursue PhD from JNU.She has been actively associated with ABVP since 2013 .After holding various responsibilities in JNU unit, she represented ABVP as the Presidential Candidate for JNUSU in the year 2017 .She actively participated in the students' protest against the anti-national sloganeering that took place in JNU In 2016, and played an important role in taking the Mission Sahasi campaign undertaken by ABVP on national level.She represented India in India's youth delegation to Sri Lanka organized by Ministry of Sports and Youth Affairs,Government of India.As a researcher In Sanskrit literature she has presented papers in venous national and international conferences.A vociferous spokesperson of nationalism and active on Issues of students' interests, she IS presently the National Secretary of ABVP. She has been elected as the National General Secretary of ABVP for this session (20I9-20) she resides In Delhi. ■

सागर रेड्डी को मिला वर्ष 2019 का प्रा. यशवंत राव केलकर युवा पुरस्कार

नवी मुंबई (मराराष्ट्र) के समर्पित सामाजिक कार्यकर्ता सागर रेड्डी का चयन 'प्रा. यशवंत राव केलकर युवा पुरस्कार 2019' हेतु चयन किया गया है। सागर रेड्डी को यह पुरस्कार 18 वर्ष से अधिक के अनाथों की देखभाल, आत्मसम्मान एवं उनके विकास के कार्यों की प्रशंसा और सम्मान हेतु दिया जा रहा है। यह पुरस्कार प्रा. यशवंत राव केलकर, जिन्होंने दुनिया के सबसे बड़े छात्र संगठन अभाविप के शिल्पकार के रूप में उसका विस्तार करने में महत्वपूर्व योगदान रहा रहा है, उनकी स्मृति में दिया जाता है। यह पुरस्कार 1991 से प्रतिवर्ष दिया जा रहा है। यह अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद तथा विद्यार्थी निधि न्यास का संयुक्त उपक्रम है, जो शिक्षा और छात्रों के उत्थान के लिए प्रतिबद्ध है।

श्री सागर को वर्ष 2019 का युवा पुरस्कार दिनांक 22 से 25 नवंबर 2019 को आगरा (ब्रज) में होने वाली अभाविप की राष्ट्रीय परिषद् (65 वें राष्ट्रीय अधिवेशन) में दिनांक 25 नवंबर को प्रातः 11:30 बजे आयोजित प्रा. यशवंतराव केलकर युवा पुरस्कार वितरण समारोह में प्रदान किया जायेगा। विभिन्न समाज उपयोगी काम करने वाले युवा सामाजिक कार्यकर्ताओं के कार्य को प्रोत्साहन देने हेतु समाज के सम्मुख लाना, ऐसे युवाओं के प्रति समूचे युवा वर्ग की कृतज्ञता प्रकट करना और देश के सभी युवाओं में ऐसे काम करने की प्रेरणा उत्पन्न करना यह इस युवा पुरस्कार का प्रयोजन है। इस पुरस्कार में एक लाख रूपये की राशि प्रमाणपत्र एवं स्मृतिचिह्न समाविष्ट है।

सरकार द्वारा चलाए जा रहे अनाथालयों के नियम के अनुसार उनमें रहने वाले बच्चों की देखभाल 18 वर्ष की उम्र तक ही किया जा सकता है। 18 वर्ष पूर्ण होने के उपरांत उन्हें उस संस्था से निकाल दिया जाता है और यह मान लिया जाता है कि वे बच्चे अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन कर सकते हैं, किंतु विडंबना यह है कि उन अनाथ बच्चों को जीवन के उस मोड़ पर लाकर पटक दिया जाता है जब उन्हें संस्था और समाज की सबसे ज्यादा जरूरत होती है। क्योंकि यही वह समय है जब

उन्हें ना तो दुनिया की पहचान होती है और ना ही समाज की समझ। कब वह अपराध की दुनिया में पहुंच जाते हैं पता ही नहीं चलता। अपराध और वेश्यावृत्ति इनकी नियति बन जाती है।

हमारी संस्कृति में ऐसी मान्यता है कि भगवान हर रूप में आते हैं। भारतीय चिंतन परंपरा का मूल आधार ही आशावादी होना है। ऐसे ही हजारों अनाथों के लिए आशा की किरण बनकर सागर रेड्डी उभरे हैं जो समाज के लिए प्रकाश स्तंभ है। एक वर्ष की आयु में अपने माता – पिता को खो देने वाले सागर रेड्डी का बचपन अनाथालय में बीता। अनाथालय में पले बढ़े सागर रेड्डी पढ़ाई में होशियार थे, किंतु समय का चक्र पूरा होते ही उन्हें अन्य बच्चों की भांति आश्रम से निकाल दिया गया। आश्रम से निकाले जाने के बाद उनके मन में अनेंकों विचार आए इसमें से आत्महत्या करना भी शामिल है। किंतु जीवन जीने की अपार जिजीविषा लिए किसी तरह स्वप्नों के शहर मुंबई पहुंचे।

मुंबई में दो – चार साल तक जीवन जीने के लिए अच्छे – बुरे काम करते रहे, कि अचानक उनकी भेंट एक सज्जन पुरुष से हो जाती है, जो इनके जीवन के हर प्रकार की जिम्मेदारियों को उठाता है। कहते हैं 'डूबते को तिनके का सहारा काफी होता है।' सागर रेड्डी के जीवन में वह व्यक्ति तिनके का सहारा बनकर आता है और यहीं से सागर रेड्डी के जीवन में बदलाव आता है। जब वह मुंबई के चेंबूर में स्वामी विवेकानंद

इंजिनियरिंग कॉलेज से शिक्षा पूर्ण करने के बाद एल.टी. में अभियंता की नौकरी करते हैं। यहां होनी को तो कुछ और ही मंजूर था। नौकरी के बाद पहली बार आश्रम आने पर उन्हें अहसास हुआ कि हर सागर के किस्मत में दयावान व्यक्ति नहीं आता। कल आश्रम से निकलने वाले बच्चों का क्या?यह प्रश्न उनकी आत्मा को अंदर तक झकझोर दिया और यहीं से सागर रेड्डी अनाथ बच्चों के माता – पिता बनने का प्रण किया।

भायखला के पठान चाल के किराये के कमरों में 72 अनाथ बच्चों से शुरू हुआ सागर रेड्डी का यह कार्य आज औरंगाबाद, बैंगलुरु, हुबली, रायचूर, हैदराबाद आदि स्थानों पर कार्यरत है। अभी तक इस संस्था के माध्यम से 1125 अनाथ बच्चों को आत्मनिर्भर, 700 बच्चों को नौकरी के योग्य, यही नहीं 60 से अधिक युवतियों का कन्यादान कर पिता का धर्म भी निभाया है। आज निराधार संघ में 600 से अधिक अनाथ बच्चे अपना जीवन संवार रहे हैं। सागर के अनवरत, अकथ प्रयास का ही फल है कि 17 जनवरी 2018 को महाराष्ट्र सरकार ने अनाथ बच्चों के लिए सरकारी नौकरी में 1%का आरक्षण पारित किया। यह आरक्षण निराधारों के लिए प्रकाशपूंज है।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. एस. सुबैय्या एवं राष्ट्रीय महामंत्री आशीष चौहान ने प्रा. यशवंत राव केलकर युवा पुरस्कार प्राप्तकर्ता सागर रेड्डी को बधाई दी और उनके उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं दी। ■

ABVP SHILLONG ORGANISED U TIROT SING BEST STUDENT AWARD

ABVP Shillong organised U Tirot Sing Best Student Award at U So-so Tham Auditorium, Shillong .Chief Guest of the program was Hon'ble Chief Minister of Meghalaya Conrad K Sangma*.This program is being organised by abvp from last four year to facilitate school toppers of class X and XII on the name of great freedom fighter of Meghalaya U TIROT SING.

Eminent personalities like Honourable Governor of Meghalaya,Vice Chancellor of North Eastern Hills University, Director of NIT MEGHALAYA has enhanced the program by being the Chief Guest of the program.

Honorable CM In his motivational address said, ₹No matter what you do in life, the only thing that matters are your core values. It is your character that will get you through your life. Your passion, hard work, belief, faith, love for your nation and love for what you do is what will define you.₹

He also urged the students to live for the nation and to contribute to their communities in every capacity they can.He also mentioned

discipline and punctuality of ABVP Programs. He said the ideology of ABVP is nation first and to protect tradition, culture and values of nation.

Total 161 awardee students participated from 145 schools and 1241students participated total in program....

Guest of Honour was hon.cabinet Minister Shri Alexander LalooHek and ABVP National General Secretary ShriAshishchauhan was present along with State President of ABVP Meghalaya Mrs Lekhi A Sangma,ABVP State Secretary Miss.Darilin Tang and East Khasi Hills district convenor Ms.EndalinThabah... ■

गुरु नानक देव जी के 550 वें प्रकाशोत्सव पर विशेष

आध्यात्मिक साधना के वाहक गुरु नानक देव जी

| डॉ. कुलदीप चन्द्र अग्निहोत्री |

गुरु नानक देव जी के जन्म के अवसर को भाई गुरदास ने चित्रित करते हुए लिखा है -

सुणी पुकारि दातार प्रभु गुरु नानक जग माहि पठाइआ।
चरन धोइ रहरासि करि चरणामृत सिखां पीलाइआ।

(भाई गुरदास, वार-1, पउडी 23)

नानक देव वेदी वंश में पैदा हुए थे, इस वेदी कुल की उत्पत्ति एवं ऐतिहासिकता का वर्णन दशगुरु परम्परा के दशम गुरु श्री गोविन्द सिंह जी ने अपनी आत्मकथा, बिचित्र नाटक में किया है। गोविन्द सिंह जी नानक देव द्वारा स्थापित दशगुरु परम्परा के दशम गुरु थे। वे हिन्दी, पंजाबी, ब्रज भाषा, संस्कृत और फ़ारसी इत्यादि अनेक भाषाओं के ज्ञाता ही नहीं थे बल्कि अनेक विषयों के प्रकांड पंडित भी थे। भारतीय इतिहास की उनकी समझ बहुत गहरी थी। औरंगज़ेब को लिखे जफरनामा में इसके प्रमाण मिलते हैं। नानक वंश को जानने समझने के लिए गोविन्द सिंह की आत्मकथा सबसे प्रामाणिक और महत्वपूर्ण स्रोत कही जा सकती है। गोविन्द सिंह जी सूर्यवंश की पृष्ठभूमि का उल्लेख करते हैं।

बनता कद्रू दिति अदिति ए रिख बरी बनाइ।
नाग नागणि देव सभ दईत लए उपजाइ।।

(बिचित्र नाटक 2-18)

महर्षि कश्यप की चार पत्नियाँ थीं। वनिता, कद्रू, दिति और अदिति। अदिति के पुत्रों से सूर्यवंश शुरु हुआ। इसी वंश में राजा रघु हुए। रघु के पुत्र का नाम अज था। अज का पुत्र दशरथ था। दशरथ के चार पुत्र हुए। राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न। राम के दो सुपुत्र थे। राम के सुपुत्र लव ने लाहौर शहर की स्थापना की और उनके दूसरे पुत्र कुश ने क़सूर नगर की स्थापना की। कालान्तर में लव के वंश में कालराय और कुश के वंश में कालकेत नाम के राजा हुए। दोनों वंशों में झगड़ा शुरु हो गया। क़सूर नरेश कालकेतु जीत गया और लाहौर नरेश कालराय पराजित हो गया। कालराय भाग कर सनौढ देश को चला गया। वर्तमान काल का मथुरा भरतपुर क्षेत्र उन दिनों सनौढ कहलाता था। सनौढ के राजा ने अपनी पुत्री का विवाह कालराय से कर दिया। कालराय के पुत्र का नाम सोढीराय था। उसने अनेक वर्षों तक सनौढ प्रदेश पर राज किया और उसी के नाम से वंश का नाम भी सोढी पड़ गया। लेकिन लव के पौत्र-प्रपौत्र यह भूल नहीं पाए थे कि कसूरवालों ने उन्हें पराजित कर लाहौर से भगाया हुआ है। उसी पराजय का बदला लेने के लिए सोढीवंशियों ने लाहौर पर हमला कर दिया। लववंशियों और कुशवंशियों का भयंकर युद्ध हुआ। लववंशी विजयी हुए और कुशवंशी राजा देवराय पराजित हो गया। कुशवंशी अपने बचे खुचे योद्धाओं को लेकर काशीजी को चले गए। वहाँ जाकर उन्होंने वेदों का अध्ययन करना शुरु कर दिया और वे वेदपाठी हो गए। वेदपाठी होने के कारण वे वेदी के नाम से प्रसिद्ध हो गए। गोविन्द सिंह जी ने बिचित्र नाटक में इसका उल्लेख इस प्रकार किया है -

जिनै बेद पट्ठिओ सु बेदी कहाए।।
तिनै धरम के करम नीके चलाए।। (4-1)

पंजाब में सोढियों को अपने भाईयों की इस विद्वत्ता का पता चला तो उन्होंने साग्रह सन्देशवाहक भेज कर उन्हें वापिस पंजाब बुलाया। यह संदेश मिलने पर वेदी वंश के लोग प्रसन्नता पूर्वक पंजाब में आ गए। गोविन्द सिंह लिखते हैं-

सभै बेद पाठी चले मद्र देसं।।
प्रनामं कीयो आनकै कै नरेसं।। (4-2)

इन वेदपाठी कुशवंशियों ने सोढी राजा को वेद सुनाए। वेदपाठ सुन कर इतना प्रसन्न हुआ कि उसने अपना राजघाट अपने भाई इन कुशवंशियों को दे दिया और स्वयं राजघाट त्याग कर अरण्यगामी हुए। वेदियों की कई पीढ़ियों ने राज किया। लेकिन धीरे धीरे वेदियों में फूट पड़ गई। लड़ाई झगड़े बढ़ने लगे और धीरे धीरे उनके हाथ से राजघाट खिसकने लगा। अन्त में स्थिति यह हो गई कि वेदियों के पास केवल बीस गाँव बचे। वेदपाठ तो कभी का बन्द हो गया। अब वेदी खेतीबाड़ी का काम करने लगे थे। गोविन्द सिंह लिखते हैं--

बीस गाव तिन के रहि गए।।
जिन मो करत क्रिसानी भए।। (5-3)

इसी कालखंड में वेदी वंश में नानक देव जी का जन्म हुआ। गोविन्द सिंह जी लिखते हैं-

तिन बेदीअन की कुल बिखै, प्रगटे नानक राए।
सब सिखन को सुख दऐ जह तह भए सहाए।।(5-4)

बिचित्र नाटक के दूसरे अध्याय से लेकर पाँचवे अध्याय तक में वेदी वंश की उत्पत्ति की ऐतिहासिक कथा का वर्णन किया गया है। ज्ञानी नारायण सिंह ने इन प्रसंगों की व्याख्या की है।)

वेदियों के इस कुल में नानक देव जी का जन्म पश्चिमी पंजाब के तलवंडी (यही तलवंडी गाँव आजकल ननकाना साहिब से जाना जाता है) नामक ग्राम में विक्रमी सम्वत 1526 के कार्तिक मास की पूर्णिमा को मेहता खत्री परिवार में हुआ था। (कुछ विद्वान उनका जन्म वैशाख मास मानते हैं) (जनरल सर जोहन जे एच गोरडोन ने अपनी पुस्तक दी सिक्ख में गुरु नानक देव जी को जाट बताया है। इसी प्रकार उसने दशगुरु परम्परा के अन्य सभी गुरुओं को भी जाट ही लिखा है, जो सही नहीं है। पंजाब को जीतने के बाद अनेक अंग्रेज़ नौकरशाहों ने पंजाब के इतिहास व सिक्खों के इतिहास पर अनेक पुस्तकें लिखीं जिनमें तथ्यों की व व्याख्या की इस प्रकार की गल्तियों की भरमार है। जनरल सर जोहन जे एच गोरडोन, दी सिक्खज, पृष्ठ 13) उस समय यह गाँव राय बुलार की तलवंडी कहलाती थी। उनके पिता का नाम कल्याण चन्द मेहता था जो आमतौर पर कालू मेहता के नाम से प्रसिद्ध हैं। माता का नाम तृप्ता था। उनके पिता शासकीय सेवा में पटवारी के पद पर कार्यरत थे। नानक देव जी की एक बड़ी बहन भी थी, जिसका नाम नानकी था। नानक देव बचपन से ही विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न थे। उनके पिता ने जब उनको कुछ पैसे दिए कि कोई लाभकारी व्यवसाय करो जिसमें चार पैसे का लाभ हो। कोई ऐसा सौदा जिसमें लाभ जरुर हो। वैसे तो सभी व्यवसाय लाभ के लिए ही तो किए जाते हैं। नुक़सान के लिए कौन सौदा करता है? नानक देव ने भी ऐसा ही सौदा किया। उन्होंने उन पैसों से भूखे साधुओं को भोजन करवा दिया। भूखे साधु तृप्त हुए और नानक को लगा कि सौदे में इससे ज़्यादा और लाभ नहीं हो सकता। वे प्रसन्नता पूर्वक घर आकर पिताजी को इस सच्चा सौदा के बारे में बताने लगे लेकिन पिता को इस सौदे में कोई लाभ नज़र नहीं आया। उनके लिहाज़ में तो पूँजी लुट गई। पिता नानक को घर में बाँधना चाहते थे लेकिन नानक साधु संग घूम रहे थे। इस प्रकार के हालत में हर भारतीय माता पिता के पास इस प्रकार की स्थिति में एक ही रास्ता होता है। नानक देव के पिता ने भी वही रास्ता चुना और नानक देव जी की शादी बटाला में कर दी गई। लेकिन आजीविका का क्या हो? इस मरहले पर नानक की बड़ी बहन नानकी और उनके पति जयराम आगे आए। वे नानक देव को अपने साथ सुल्तानपुर लोदी ले गए, वहाँ नबाबों दौलत खान के प्रशासन में नौकरी दिलवा दी। नौकरी तो ज़्यादा देर निभ नहीं पाई लेकिन तीन दिन स्थानीय नदी में समा जाने के बाद उन्होंने वह ज्ञान दिया जो कालान्तर में पश्चिमोत्तर भारत में तो एक प्रकार से मूलमंत्र ही बन गया। इक ओंकार सतिनाम। और नबाबों की नौकरी छोड़ कर वे भारत की यात्रा के लिए चल पड़े। उन्होंने अपने जीवन के लगभग पच्चीस साल इन यात्राओं में खपा दिए। सम्पूर्ण भारत को समझने-समझाने का प्रयास। नानक देव के जीवन के संध्याकालीन में मध्य एशिया के एक बर्बर आक्रमणकारी बाबर ने भारत पर मला किया। नानक देव ने उच्च स्वर से उसका विरोध किया। नानक देव जी ने अपने देहान्त से पहले अपने शिष्य को अंगद नाम देकर अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर दिया। इस प्रकार देश के इतिहास में दशगुरु परम्परा की शुरुआत हुई।

भारतीय इतिहास के मध्यकाल के भक्ति आन्दोलन में अनेक सम्प्रदाय प्रफुल्लित हुए। लगभग सभी निर्गुण सम्प्रदायों ने एकेश्वरवाद की बात की। जाति पाँति के भेद भाव की केवल निन्दा ही नहीं की बल्कि उसके अपने अपने सम्प्रदाय में व्यवहारिक रूप से नकारा भी। कबीर ने तो इसके लिए अत्यन्त सख़्त भाषा का इस्तेमाल भी किया। 'जो तू ब्राह्मण ब्राह्मणी जाया' कबीर का कहा हुआ दोहा ही है। नामदेव, तुकाराम, रविदास, सभी जाति

व्यवस्था के ख़िलाफ़ थे। अच्छे कर्म और अच्छे आचरण पर सभी ने ज़ोर दिया। ईश्वर की महिमा सभी ने गाई और सभी ने गुरु की महत्ता पर ज़ोर दिया। रहस्यवादी चेतना भी अनेक आचार्यों और सन्तों में मिल ही जाएगी। जैसे नानक देव जी की परम्परा आगे बढ़ी, वैसी अन्य अनेक सन्तों/सम्प्रदायों की भी आगे बढ़ी। बाक़ी सन्तों और गुरुओं की परम्परा अपने दायरों तक सिमट कर रह गई और उन्हीं रूढ़ियों या कर्मकांडों में फिसल गई जिनके ख़िलाफ़ उन्होंने आवाज़ उठाई थी। लेकिन गुरु नानक जी ने जो परम्परा स्थापित की, वह उस ऐतिहासिक खालसा पंथ की जन्मदाता बनी और जिसने भारत से विदेशी मुग़ल-अफ़ग़ान सत्ता को उखाड़ फेंकने में प्रमुख भूमिका ही अदा नहीं कि बल्कि विदेशी इस्लामी शासकों द्वारा चलाए जा रहे मतान्तरण आन्दोलन को भी बहुत सीमा तक रोका। पश्चिमोत्तर भारत के विषय में तो यह बात निश्चय से ही कही जा सकती है। पश्चिमोत्तर भारत या सप्त सिन्धु का अधिकांश हिस्सा मसलन ख़ैबर पख्तूनखवा, बलोचिस्तान, सिन्ध और पश्चिमी पंजाब तो दशगुरु परम्परा के उदय होने से पहले बहुत सीमा तक मतान्तरित हो चुका था और सैयद कलन्दरों व सूफ़ियों के डेरों का अड्डा बन चुका था। गुरु नानक देव जी के उन्नायन से इन सूफ़ियों और सैयद कलन्दरों से संवाद शुरु हुआ। गुरु नानक देव जी की जन्म साथियों में ऐसे अनेकों उदाहरण भरे पड़े हैं। ऐसे सैयद डेरों के चमत्कारों का आतंक उन्होंने ख़त्म किया। गुरु नानक देव जी की समस्या इस्लाम नाम का मज़हब नहीं था। न ही उस मज़हब को मानने वाले मुसलमान थे। किसी मज़हब से उनका कोई विवाद नहीं था। यदि हर मज़हब ईश्वर से साक्षात्कार की बात ही करता है तो वह किसी भी तरीक़े से हो सकता है, इसलिए किसी की भी निन्दा करने की ज़रूरत ही नहीं है। बल्कि गुरु नानक देव ने तो सच्चा मुसलमान कौन हो सकता है, उसकी परिभाषा भी मक्का मदीना में जाकर अरबों को ही समझाई। गुरु नानक देव तो हिन्दुस्तान में उन मुसलमानों को सम्बोधित कर रहे थे जो विदेशी आक्रमणकारियों के आक्रमणों के कारण किन्हीं कारणों से मतान्तरित हो गए थे। जब वे मुसलमानों को सम्बोधित कर रहे हैं तो वे वास्तव में उन मतान्तरित भारतीय मुसलमानों को ही सम्बोधित कर रहे हैं। यह मानना पड़ेगा कि गुरु नानक देव जी की इस लोक संचारक प्रंणाली से कुछ सीमा तक पश्चिमोत्तर भारत में मतान्तरण रुका। भारत में इरफ़ान हबीब स्कूल आफ हिस्ट्री के अध्यापक चाहे गुरु नानक देव जी के इस ऐतिहासिक योगदान की चर्चा न करें लेकिन आज पंजाब, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश मतान्तरण से बचा है उसका श्रेय नानक देव के उन्नायन को ही जाता है। उनसे पहले आक्रमणों और अत्याचारों की चक्की में पिस रहा सप्त सिन्धु विवेका में मुसलमान बन रहा था।"In west Punjab, particularly, whole tribes like, Tiwanas, Sials, Gakhars, Janjuasets accepted new faith Islam with a view to preserve their social status."(Fauja Singh, Religio- cultural heritage of the Punjab, from the book, The Sikh Tradition:A continuing reality, edited by Sardar Singh Bhatia and Anand spencer, page 19)

मुग़ल आक्रमण काल में ही साहस पूर्वक बाबरवाणी सुनाने वाले नानक देव पलायनवादी नहीं थे बल्कि यथार्थ के धरातल पर खड़े होकर भविष्य की रणनीति निर्धारित करने वाले कर्मयोद्धा थे। इसलिए गुरु नानक मार्ग की खालसा पंथ में परिणती उसका स्वभाविक विकास था। लेकिन भारतीय दर्शन शास्त्र के भीतरी मर्म को अनजाने में या फिर जानबूझकर कर पकड़ पाने में असमर्थ इतिहासकार, गुरु नानक देव जी से शुरु हुई परम्परा की परिणिती जब खालसा पथ में देखते हैं तो इसे नानक देव के पथ से बिचलन बताना शुरु कर देते हैं। उनके लिहाज़ से यह बिचलन पाँचवे गुरु श्री अर्जुन देव जी से ही शुरु हो गया था और इसकी स्पष्ट गूँज छटे गुरु हरगोविन्द जी में दिखाई पड़ती है, जब उन्होंने मीरी और पीरी की दो तलवारें धारण कीं। सांसारिक कार्यों की साधना के लिए तलवार धारण करना उनकी दृष्टि में नानक के मार्ग से बिचलन है। गोकुल चन्द नारंग ने इसे अंग्रेज़ी भाषा के शब्द ट्रांसफोरमेशन से सम्बोधित किया है। (transformation of Sikhism, Gokul Chand Narang) लेकिन एक बात ध्यान में रखनी चाहिए, दश गुरु परम्परा के प्रथम गुरु श्री नानक देव जी से लेकर दशम गुरु श्री गोविन्द सिंह जी एक ही वैचारिक परम्परा के वाहक हैं। उस परम्परा में वैचारिक निरन्तरता भी है और कर्म की निरन्तरता भी विद्यमान है। उस परम्परा में विचलन की तलाश करना, परम्परा को ठीक से न समझ पाने और तत्कालीन भारतीय जनमानस को न पढ़ सकने के कारण ही हो सकती है। इसलिए पंचम गुरु अर्जुन देव जी की शहादत, मीरी पीरी के संकल्प, नवम गुरु श्री तेगबहादुर की शहादत और दशम गुरु द्वारा राष्ट्र और

धर्म के लिए सर्वस्व अर्पित कर देने के इतिहास के बीज हमें गुरु नानक देव जी की वाणी और उनकी जीवन यात्रा के प्रसंगों में से ही तलाशने होंगे। गुरु गोविन्द सिंह जी, गुरु नानक देव के सन्देश और परम्परा को ही युगानुकूल बना कर प्रसारित कर रहे थे। एक बात का ध्यान रखना चाहिए, विदेशी इस्लामी राज्य का जो क़ाज़ी सुल्तानपुर लोदी में गुरु नानक देव जी के पीछे पड़ गया था और उन्हें मस्जिद में नमाज़ पढ़ने के लिए राज्यादेश से ले गया था, उसने दशगुरु परम्परा का पीछा दशम गुरु गोविन्द सिंह तक किया और उनके दो सुपुत्रों को सरहिन्द की दीवारों में ज़िन्दा चिनवा कर ही दम लिया। इस्लाम का यह क़ाज़ी दशगुरु परम्परा के उदय काल से ही, उसके पीछे पड़ गया था और यह परम्परा के दशम गुरु तक उसका पीछा करता रहा। यदि इसको हम प्रतीक भी मान लें तो ऐतिहासिक सन्दर्भों में इसका शिनाख्त भारत में इसके आगमन से भी की जा सकती है, जब यह पहली बार सिन्ध में मोहम्मद बिन क़ासिम के साथ दाख़िल हुआ था। जब हम दशगुरु परम्परा का अध्ययन और मूल्याँकन करते हैं तो हमें इस क़ाज़ी की भूमिका को भी ओझल नहीं होने देना चाहिए।

खालसा पंथ की स्थापना, गुरु नानक परम्परा द्वारा किया गया ऐतिहासिक चमत्कार ही कहा जाएगा। गुरु नानक जी ने भारतीय समाज में यह जो चमत्कार किया, उसका कारण यह है कि उन्होंने सामाजिक जीवन का आध्यात्मिकीकरण किया। यह ठीक है कि नानक देव जी भी अन्ततः परमात्मा से साक्षात्कार की साधना कर रहे थे लेकिन उनके साक्षात्कार का रास्ता हिमालय की कन्दराओं से होकर नहीं जाता था बल्कि उनका रास्ता तो इन्हीं सांसारिक गली मुहल्लों में से होकर गुज़रता था जिसके रास्तों में, कलि काते राजे कसाई बैठे थे और जिनके रास्ते में मध्य एशिया क एक निर्दलीय तुर्क पाप की जंज लेकर भारत पर आक्रमण कर रहा था। जिसने हिन्दुस्तान डराइया हुआ था। गुरु नानक को एक साथ लोभ मोह अहंकार जैसी वृत्तियों को पराजित करने की साधना भी करनी थी और उसके साथ कसाई राजा और पाप की जंज लेकर आक्रमण कर रहे बाबर को परास्त करने का रास्ता भी तलाशना था। इसीलिए सीता राम कोहली बाबरवाणी को दमन के ख़िलाफ़ प्रथम अभिव्यक्ति मानते हैं। लेकिन कुछ आधुनिक इतिहासकार इस बात को स्वीकारने को तैयार नहीं हैं कि नानक देव जी की वाणी व कर्मशीलता के सामाजिक सरोकार भी थे। उनके अनुसार नानक देव विशुद्ध रूप से आध्यात्मिक पथ के पथिक थे। गुरतेज सिंह ने ऐसे कुछ उदाहरण विशेष रूप से अपने एक आलेख में उद्धृत किए हैं। इनमें sir Charles Gough, C.H. Payne, John J.H.Gordon, W.L.M. Gregorका विशेष उल्लेख किया जा सकता हे।।" (Gurtej Singh, Political ideas of guru Nanak, The originator of the Sikh faith, Recent researches in Sikhism, edited by Jasbir Singh Mann and Kharak Singh में संकलित में से उद्धृत, पृष्ठ 68 and 63) ये सभी विदेशी लेखक बिना गुरुवाणी पढ़े यह दावा करते हैं कि नानक देव ने जिस मार्ग का अनुसरण किया था वह विशुद्ध रूप से पार्थिव या रिलिजियस था। उनकी वाणी में कोई राजनैतिक या सामाजिक स्वर नहीं है। लेकिन गुरतेज सिंह इसके साथ ही एक व्यंग्यात्मक टिप्पणी भी करते हैं कि "गुरुवाणी को लेकर इस प्रकार का निष्कर्ष निकालने वाले अधिकांश तथाकथित विद्वान ब्रिटिश साम्राज्य के समर्थक ही हैं। (गुरतेज सिंह पृष्ठ 63) नानक वाणी का कोई राजनैतिक स्वर है या नहीं, इस पर तो फिर भी दो मत हो सकते हैं लेकिन इसमें कोई बहस नहीं हो सकती कि इन विदेशी लेखकों का यह निष्कर्ष उनके राजनैतिक स्वार्थ साधना की पूर्ति का हिस्सा है। नानक देव तो ये दो दो साधनाएँ एक साथ करते दिखाई देते हैं। लेकिन यह उनकी व्यक्तिगत साधना मात्र नहीं थी बल्कि वे तो भविष्य के भारत का भी साक्षात्कार कर रहे थे। वे भविष्यद्रष्टा भी थे। उन्हें तो एक ऐसी परम्परा स्थापित करनी थी जो उनके बताए रास्ते पर चलकर उनके अधूरे काम को पूरा कर सके। और सचमुच उनकी दशगुरु परम्परा ने यह कर दिखाया। जिस परम्परा ने हिन्दुस्तान को डरा रहे बाबर को देखा था, उसी परम्परा ने 'हिन्द की चादर' को पैदा किया। भारतीय संत परम्परा के अध्येता डा० कृष्ण गोपाल का मानना है "गुरु नानक देव के जीवन का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण पहलू, इस्लाम के अत्याचारों से मुक्ति दिलाने के लिए संघर्ष हेतु वातावरण तैयार करना भी है। श्री गुरु नानक देव ने वह फ़ौलाद तैयार किया है, जिससे आगे चलकर, राष्ट्र और समाज की रक्षा के लिए, इस्लाम की आततायी शक्ति से दीर्घकाल तक संघर्ष करने वाली संत तलवार का निर्माण पंजाब में हुआ।"

(कृष्ण गोपाल, भारत की संत परम्परा और सामाजिक समरसता, पृष्ठ 210)

(लेखक हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला के कुलपति हैं)

Guru Nanak Dev Ji and his sacred message for humanity

| JAIBANS SINGH |

"Sadguru Shri Guru Nanak Pargateya Mitti Dhund jag chanan hoya"

When Guru Nanak came the mist went away and the world saw light! This is a widely used elucidation and exposition of the journey of Guru Nanak Dev Ji in this world 550 years ago. His teachings, as expounded by the Sikh religion, have as much (if not more) relevance in today's world's as they had when he first espoused them to bring about a socio-religious change in a society tearing apart due to dogmatism and inherent contradictions.

The Guru was born in an affluent Hindu family on 29 November 1469 at Ri Bhoi K Talva (present day Nankana Sahib in Pakistan Punjab). His father Kalyan Chand Das Bedi aka Mehta Kalu was an affluent businessman of the area who had good relations with the local Muslim chieftain Rai Bhular Bhatti. His mother was Mata Tripta. Nanak had only one sibling, a sister named Nanki who was five years elder to him. She was the one person with whom he was particularly attached.

The life and times of Guru Nanki are not formally recorded. Whatever is available is in the form of parables called Janamsakhis (life stories) told by those like his companion Bhai Bala who were close to him and who are said to have accompanied him in his various Udasis (journeys). Many of the events related as Janamsakhis have been corroborated with his Bani (holy verses) which are recorded in the Guru Granth Sahib.

In accordance with these Janamsakhis Nanak, as a child, remained immersed in his own thoughts and this behaviour caused considerable tension to his father, Mehta Kalu, who quite naturally, wanted his only son to grow up the normal and take over his thriving business. He, however, exhibited a rare intellect and insight into a religious philosophy that looked at a

single supreme God (monotheist). He rejected certain teachings and rituals of both Hindus and Muslims.

In order to maintain a modicum of harmony between father and son Bebe Nanki, on getting married, took her brother with her to her husband's house in Sultanpur Lodhi and it is here that Nanak spent his growing years. He worked as a manger in the provision store of the local chieftain, Nawab Daulat Khan Lodhi. While performing his duties well, he spent his spare time in meditation and the company of ascetics. He also started building a Sangat (following) there.

Bebe Nanki though that getting her brother married would improve things and accordingly on 24 September 1487, at the age of about 18 years, Nanak was married to a girl called Sulakhani, daughter of Mul Chand and Chando Rani, residents of Batala, Punjab. The wife of Guru Nanak is now called Mata Sulakhani. Nanak did go through a family life and had two sons named Sri Chand and Lakhmi Das, however, his inner core remained attracted to spirituality.

It is said that one day he went for his early morning bath in the nearby river and did not return for three days. When people had given him up as drowned he re-emerged and recited

a divine message that is recorded in the Sikh religion as the "Mool Mantra." He then declared his life mission as one dedicated to the service of God and started his divine journey by advocating "Na Koi Hindu Na Musalman." Thus, he set out his spiritual mission of considering mankind without shackles of caste and creed and religion, dedicated to the love of a single and supreme entity.

Guru Nanak Dev Ji went out on four long journeys across distant lands which are termed as Udasis. Even though there are no authenticated accounts of these spiritual journeys, their context becomes clear from the Bani that he quoted during his interaction with various peoples. It is believed that the four corners of his travels stand at Mount Sumer (Mount Kailash) where he held his most significant discussion with the ascetic Baba Gorakhnath and his 84 Siddhas; then onto to Assam in the East, Mecca-Medina in the West and Sri Lanka in the South. In the context of modern India, his signature in the form of some historical monument of fables are to be found in Himachal Pradesh, Jammu and Kashmir, Uttar Pradesh, Sikkim, Ladakh and even Nepal and Tibet and of course in the Punjab. What is significant is the Gurdwara Pathar Sahib in Ladakh; the imprint of his sandals in Nepal and reference to "Nanak Lama" in Bhutan.

He wandered across many places in those days of limited transportation, possibly on foot with his fateful companions Bhai Bala and Bhai Mardana. In every place he was known to sit outside the city, accept invitations from followers and confer with the poorest of the poor and Kings alike. Guru Nanak Dev Ji, thus, delivered his message of the entire mankind being one under the spiritual umbrella of a single creator - "Manas Ki Jaat Sabhe Ekay Pehechani Bo" (Human Beings should be recognised as one) far and wide. He never took any pretension of divinity, instead, he looked upon himself as the most humble servant of the supreme being whose definition he had given in his divine inspiration of the Mool Mantra. He advocated the concept of meditation and praise of the creator while staying connected with the world, unlike the meditative seclusion followed by Siddhas and Sadhus.

It is through the debates during his Udasis that his Bani crystalised into a spiritual message that was later recorded in the Guru Granth Sahib by subsequent Gurus and his devout Sikh disciples. The recording is in the form of nearly 1000 hymns set in superb poetry capable of being rendered by divine classical music. His essential message was "Kirat Kar, Wand Chak, Naam Jap" (Work with honesty, share what you have and take the name of the creator).

Twenty years after crisscrossing the land Baba Nanak finally decided to settle in one place and spread his message. For this purpose he chose a piece of land astride the River Ravi that had been donated to him by Dhuni Chand, an important Governor in Punjab. He named this as Kartarpur (place of God). The Guru took to the practice farming and was soon joined by his wife and other family members. Thus, Kartarpur became the first commune of the Sikh religion.

Within his community Guru Nanak Dev Ji initiated the concept of Sangat and Pangat. Sangat means congregation of people and Pangat implies sitting in rows and eating Langar (community food) together. The mornings and evening were spent in the recitation of Gurbani (holy verses), Kirtan (spiritual Hymns) and finally partaking food together in the Langar.

Thus Guru Nanak Dev Ji initiated a concept of universal brotherhood in singing praise of a single God while also remaining involved with normal family and worldly affairs. He gave impetus to this concept for 18 years at Kartarpur and laid a strong foundation for what evolved as a separate and dynamic religion. His thoughts were further crystalised by his successor Gurus who are considered to be in the same essence as the first master and are often referred to as Nanaks.

The religion, which attracted a lot of people from different walks of life, communities and religions, came at a time when there were a lot of divisions in society and people were suffering under a repressive religion driven regime. They first found solace in the religion and later used it as their strength to rid themselves of the repression.

Guru Nanak Dev Ji appointed his devout follower Bhai Lehna as his successor and gave him the name Angad, denoting that he was a part of the Guru himself. Guru Nanak left is physical form on 22 September 1539 in Kartarpur, at the age of 70. ■

प्रकृति के प्रति आदर का भाव जनजातीय समुदाय में होता है : सुनील आंबेकर

जुटान में आने वाले लोग बारिश एवं तूफान से डरने वाले नहीं हैं। उससे भी आगे बढ़कर जो मन में ठान लिया है, उसके लिए तैयार हैं। इस जुटान के माध्यम से जनजातीय समाज को मुख्यधारा से जोडने व उनके सर्वांगीण विकास के लिए मार्ग प्रशस्त करेगा।जनजातियों की जीवंत समृद्ध परंपरा, उनकी आकांक्षाओं को सम्मिलित करने से ही समाज का विकास होगा। जनजातीय समाज के प्रकृति प्रेम का ही प्रभाव है कि आज विश्व भी BE NATURAL का संदेश दे रहा है। भारत के पुनः विश्व गुरू बनने का रास्ता जनजातीय क्षेत्र व उनके जीवन शैली को अपनाकर ही संभव है। ये बातें अभाविप के राष्ट्रीय संगठन मंत्री सुनील आंबेकर ने अभाविप झारखंड द्वारा दुमका में आयोजित जनजातीय छात्र सम्मेलन, जुटान में कहा।

श्री आंबेकर ने कहा कि हमारे देश के इतिहास को जानने के लिए संस्कृतग्रंथों का सहारा लिया जा सकता है,जिसमे जाति व्यवस्था की बात जन्म के आधार पर थी, जो स्वेदज,उद्भिज,अंडज,जरायुज हैं।

जनजातीय समाज के लोग धरती का शोषण नहीं करते, बल्कि पोषण करते हैं : प्रफुल्ल आकांत

अभाविप के राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री प्रफुल्ल आकांत ने कहा कि जनजातीय समाज के सुरक्षित रहे बिना भारत आगे नहीं बढ़ सकता है। जनजातीय समाज के लोग आकाश को पिता और धरती को माता मानते हैं। उन्होंने कभी जंगलों को बचाने की परंपरा को नहीं छोड़ा है। पूरी दुनिया में ग्लोबल वार्मिंग की नीति पर चर्चा हो रही है, लेकिन हम सभी जनजातीय जीवन पद्धति की परंपरा को अपना लेते तो इस तरह बचाव नहीं करना पड़ता।

प्रकृति के लिए जीते - मरते हैं जनजातीय समाजः पाहन

रा. स्व. संघ के क्षेत्र संघचालक देवव्रत पाहन ने कहा कि हमारी एवं जनजातीय क्षेत्रों की धरोहर हमारा त्योहार है। हमें इसे बचाने की आवश्यकता है।हमें शर्म नहीं आनी चाहिए कि हमारी भाषा क्या है,हमारी वेश भूषा क्या है। हमें अपनी संस्कृति एवं जीवन पद्धति के अनुसार चलना चाहिए। हमारा जनजातीय समाज वेदकालीन पद्धति के अनुसार प्रकृति के संरक्षण के लिए मरना एवं जीना सिखाता है।

जनजातीय छात्र जुटान में आए सभी छात्र, जनजातीय समाज के ब्रांड एंबेस्डर : निखिल रंजन

अभाविप के क्षेत्रीय संगठन मंत्री निखिल रंजन ने कहा कि विपरीत मौसम, मूसलाधार बारिश और सीमित संसाधनों के बीच दुमका में द्वितीय जनजातीय छात्र जुटान " जुटान से समाधान की ओर" सोच के साथ भव्य रूप से संपन्न हुआ। विद्यार्थी परिषद ने वर्ष 2019 से गाँवो में परंपरा बचाने के लिए अभाविप ने "जुटान" का प्रयोग आरंभ किया है। सम्मेलन को अखिल भारतीय जनजाति कार्य प्रमुख जे. राममोहन एवं प्रांत संगठन मंत्री याज्ञवलक्य शुक्ल ने भी संबोधित किया। दुमका विभाग संगठन मंत्री बबन बैठा ने बताया कि जुटान में 22 जिले के 91 स्थानों से कुल 1987 लोग पहुंचे थे जिसमें छात्रों की संख्या 410 है जबकि छात्राओं की संख्या 1968 है। ■

Bangluru : ABVP runs Campus 2 Community campaign

Campus2Community is a volunteering campaign of motivated youth from different college campuses across Karnataka working for social change. The idea of campus 2 community is to inspire and persuade young volunteers to dedicate a slice of their busy schedule by creating a platform to serve the community. We invigorate students to understand and identify issues concerned with the community and address the same at their capacities. We are working under five action plans to get to the issues prevailing in the field of education that is Vikasana, Think and Tinker, Anaha, Prajna and Book drive.

Campus 2 Community in coordination with Art Matters and Students for development has taken initiative to refurbish 150 government schools in the name of "School Bell" across remote villages bordering Bangalore and in the city on the occasion of 150th birth anniversary of Mahatma Gandhiji. This program is pertinent for the youth to reminisce on Gandhi's motive of the Gram Swaraj, Education and its congruity.

Our organization is the one which has much social standing and good will. School Bell will bring solace to hundreds of students and we believe that this effort will be a torchbearer to many others who wish to follow our path of social service. Around 5000 volunteers from various reputed institutions will be a part of this event.

If education is taken as a tool, to accomplish the lives of millions of children, than we should definitely be worried about the worsening condition of government schools in Karnataka today. While the number of private schools is rapidly rising, government schools are on the verge of being or already shut down, the narrative for the cause of shutdown has always been poor accountability and infrastructure like toilets, electricity, poor ambience oflearning, lack of water, little investment or no interest in maintaining the schools either by government or by the teachers etc. Though, there are lots of efforts from the concerned authorities for the rejuvenation of government schools, this pathetic condition also iterates the utter failure of policy makers and experts to make public education attractive and hence it will definitely draw the attention of the same and stand as an exemplar for many.

There are 10 clusters which contains 10 to 15 schools that will make up to 150 govt schools in and around Bangalore. The list goes as below: ■

प्रिय मित्रों !

शिक्षा - क्षेत्र की प्रतिनिधि - पत्रिका के रूप में 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' अक्टूबर-नवंबर संयुक्तांक 2019 अंक आपके समक्ष प्रस्तुत हैं। यह अंक महत्वूर्ण लेख एवं विभिन्न समसामयिक घटनाक्रमों व खबरों को समाहित किए हुए हैं। आशा है, यह अंक आपके आवश्यकताओं के अनुरूप उपादेय साबित होगा। कृपया 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' से संबंधित अपने सुझाव व विचार हमें नीचे दिए गए संपादकीय कार्यालय के पते अथवा ई - मेल पर अवश्य भेजें : -

'राष्ट्रीय छात्रशक्ति'
26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नयी दिल्ली - 110002.
फोन : 011-23216298
www.chhatrashakti.in
rashtriyachhatrashakti.abvp@gmail.com
www.facebook.com/rashtriyachhatrashakti
www.twitter.com/chhatrashakti1

स्त्री शक्तिः भारतीय समाज का मूल स्वरूप

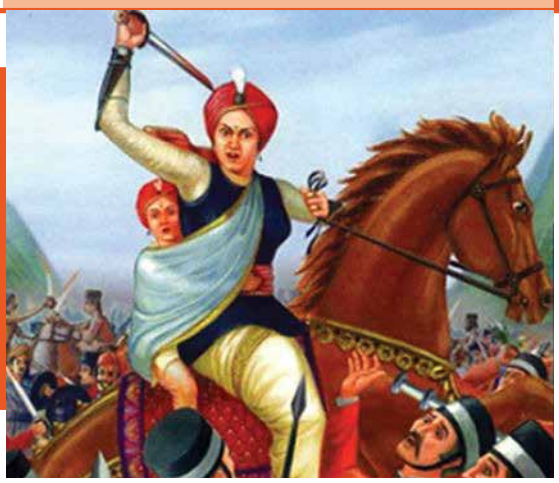

| निधि त्रिपाठी |

या देवि सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः अर्थात् जो देवी सब प्राणियों में शक्ति के रूप में स्थित है उसे बारम्बार नमस्कार है। दुर्गासप्तशती की ये पंक्तियाँ महज शब्दसमूह नहीं है अपितु भारतीय समाज तथा भारतीय जनमानस के मनोभावों की अभिव्यक्ति है। शक्ति शब्द स्त्रीलिंग का शब्द है। 'स्त्री शक्ति' यह केवल एक शब्द नहीं है अपितु एक विशेषण है जो स्नेह, वात्सल्य, करुणा, साहस, निर्भीकता, सहनशीलता, गाम्भीर्य, आत्मविश्वास तथा ज्ञान जैसे शब्दों को स्वयं में समाहित किये हुए है। यह वह शक्ति है जो दृढ प्रतिज्ञा करने पर सावित्री के रूप में यमराज से भी अपने पति के प्राणों को छीन लाती है यह वह शक्ति है जो त्याग की प्रतिमूर्ति बन कर सीता माता का रूप धारण कर अपने पतिव्रत धर्म का निर्वाह करने के लिए समस्त वैभव को त्याग कर वनवास करती हैं, यह वह शक्ति है जो अपने ज्ञान से भामती के रूप में शंकराचार्य और अपने पति मण्डन मिश्र के बीच शास्त्रार्थ में निर्णायिका बनती है। इसी प्रकार से आज साइना नेहवाल, पी. वी. सिन्धु, हिमा दास, सालूमरदा थिमक्का तथा रूमा देवी की भाँति अनेक स्त्री शक्ति अपने पराक्रम से भारत की बुलंदी का नया स्वर्णिम इतिहास लिख रही हैं। शक्ति के बिना शिव अधूरे हैं। अतः भारत में स्त्री शक्ति की चर्चा का तात्पर्य लिंग संघर्ष उत्पन्न करना नहीं है अपितु स्त्री एवं पुरुष दोनों एक दूसरे के परस्पर पूरक हैं। दोनों के परस्पर सहयोग से ही समाज चलता है।

19 नवम्बर को स्त्री शक्ति दिवस के रूप में मनाया जाता है। 19 नवम्बर वह तारीख है जब भारतीय वीरांगना और मातृभूमि पर समर्पित रानी लक्ष्मीबाई का जन्म हुआ था। अपनी 23 वर्ष की आयु में उन्होंने ऐसे अदम्य साहस का परिचय दिया कि आज वे स्त्री शक्ति की पर्याय बन गई हैं। जिस आयु में बच्चे समाज की परिस्थिति से अनभिज्ञ होकर स्वयं में व्यस्त होते हैं, उस आयु में रानी लक्ष्मीबाई ने हाथ में तलवार थाम कर इस देश के लिए अपने प्राणों तक को न्यौछावर करने का प्रण लिया था। लक्ष्मीबाई जी का जन्म 19 नवम्बर 1835 को हुआ। 7 वर्ष की आयु में विवाह हो गया तथा 16 वर्ष की आयु में रानी लक्ष्मीबाई माँ बन गई। 1858 में 23 वर्ष की अल्प आयु में आतताई अंग्रेजों से अपनी मातृभूमि को बचाते हुए अपने प्राण त्याग दिए। 23 वर्ष की अल्प आयु में स्वयं को मातृभूमि पर बलिदान कर देना यह असीम साहस का ही परिणाम है। लक्ष्मीबाई जी का जीवन भारतीय समाज को स्त्री शक्ति का बोध कराता है। उनका जीवन एक स्वाभिमानी पुत्री तथा पत्नी, वात्सल्य की साक्षात प्रतिमूर्ति, मातृभूमि की एक सच्ची भक्त, साहसिक योद्धा, कुशल कूटनीतिज्ञ तथा एक प्रजा वात्सल्य से परिपूर्ण रानी का था। जहाँ आज परिवारों में पारिवारिक सदस्य अस्तित्व की लडाई में उलझ रहे हैं वहीं लक्ष्मीबाई जी का सम्पूर्ण जीवन इस समस्त समस्या का समाधान कराने के लिए एक सम्यक उदाहरण के रूप में हम सभी समक्ष प्रस्तुत है। लक्ष्मीबाई जी का जीवन स्त्री की बहुमुखी प्रतिभा को दर्शाता है तथा समाज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में स्त्री की भूमिका को भी स्पष्ट करता है।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद 19 नवम्बर को स्त्री शक्ति दिवस के रूप में मनाता है। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के लिए स्त्रीशक्ति यह केवल एक शब्द नहीं है अपितु अपने विचारों का प्रकटीकरण है। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद स्त्री से संबन्धित समस्त प्रकार के पूर्वाग्रहों को तोडते हुए नित्य उनके नेतृत्व कौशल को बढाने और उनके भीतर छिपी हुई शक्ति का अभिज्ञान कराने के लिए अहर्निश प्रयासरत है। एक स्त्री अपनी शिक्षा के साथ ही समाज एवं अपने राष्ट्र के लिए कैसे योगदान दे सकती है इस दिशा में अखिल भारतीय विद्यार्थी

परिषद् आज उन्मुख है। आज 'मिशन साहसी' के माध्यम से पूरे भारत में स्त्री को उसके भीतर छिपी हुई उसकी शक्ति का बोध विद्यार्थी परिषद् करवा रही है। 'मिशन साहसी' के माध्यम से पूरे भारत की 8 लाख से भी अधिक छात्राओं को उनकी शक्ति का बोध कराने का प्रयास किया गया है। यह अभियान छात्राओं को केवल शारीरिक रूप से मजबूत बनाने का कार्य नहीं करता है अपितु जो यह महत्वपूर्ण कार्य करता है वह है छात्राओं को मानसिक रूप से मजबूत बनाना ताकि अन्याय के विरोध में अपनी आवाज को उठाने के लिए मानसिक रूप से मजबूत बन सकें। किसी भी बात का प्रतीकार करने के लिए सर्वप्रथम मानसिक साहस की आवश्यकता होती है और मिशन साहसी यह मानसिक साहस प्रदान कर भय मुक्त बनाता है। एक तरफ जहाँ छद्म महिलावादी समाज में लिंग संघर्ष को जन्म दे कर महिलाओं के पुरुषीकरण की दिशा में ले जा रहे हैं वहीं अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् स्त्री के भीतर छिपी हुई शक्ति का उन्हें आभास कराकर उन्हें उनके ही मूल रूप में स्थापित करने का प्रयास कर रही है। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् द्वारा सेनेट्री नैपकिन को समस्त प्रकार के कर से मुक्त कराने के लिए पूरे भारत में बहुत बड़ा अभियान छेड़ा गया जिसका नेतृत्व छात्राओं ने किया तथा उस अभियान में सफलता भी प्राप्त की। आज अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के माध्यम से छात्राएँ विस्तारिका निकल कर २ वर्ष, ४ वर्ष अथवा ५ वर्ष या उससे अधिक वर्ष का अपना सम्पूर्ण समय समाज तथा राष्ट्र की उन्नति में लगा रही हैं। पिछले कई वर्षों से 'स्वयंसिद्धा' इस कार्यक्रम के माध्यम से अभाविप छात्राओं को उनकी प्रतिभा का पूर्ण रूप से प्रदर्शन करने का अवसर देता है एवं उन्हें मंच प्रदान करता है। 2016 में अभाविप के द्वारा दिल्ली में छात्रा संसद का आयोजन किया गया जिसके माध्यम से पूरे भारत की छात्राओं ने सहभाग किया तथा विभिन्न विषयों पर चर्चा की। इस छात्रा संसद के माध्यम से छात्राओं को प्रश्न करने, अपनी बात रखने तथा अपने राज्य में महिलाओं से संबंधित समस्याओं को बताने के लिए एक मंच प्रदान किया गया। भारत के विभिन्न महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों में होने वाले छात्रसंघ चुनावों में अभाविप की ओर से छात्राएं चुनाव जीतकर समाज को एक कुशल नेतृत्व प्रदान कर रही हैं। आज अभाविप के माध्यम से छात्राएँ सांगठनिक कौशल तथा नेतृत्व की कला का विकास कर रही हैं। अपने लक्ष्य राष्ट्र पुनर्निर्माण में स्त्रीशक्ति एक सोपान है अतः अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् निरन्तर अपने लक्ष्य की प्राप्ति की ओर बढते हुए अपने सोपानों तक पहुँच रहा है। ■

(लेखिका अभाविप की राष्ट्रीय मंत्री हैं)

खबर

विकासार्थ विद्यार्थी ने स्वच्छता प्रहरियों को किया सम्मानित

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के प्रकल्प विकासार्थ विद्यार्थी(मेरठ प्रांत) द्वारा सम्मान समारोह आयोजन कर स्वच्छता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देने वाले स्वच्छता प्रहरियों को सम्मानित किया गया। समारोह के संबोधित करते हुए प्रांत संगठन मंत्री महेश राठौड़ ने कहा स्वच्छता किसी धर्म,जाति समाज का अधिकार नहीं बल्कि प्रत्येक व्यक्ति की जिम्मेदारी है। स्वच्छता को लेकर विकासार्थ विद्यार्थी देशभर में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन करता है लेकिन समाज में पहली बार मेरठ प्रांत सफाई कर्मचारियों का सम्मान समारोह का आयोजन किया गया है। यह समाज को संदेश देने की पहल है जिस कार्य से लोग बचते हैं उस कार्य को इस समाज द्वारा स्वच्छता देवदूत के रूप में किया जा रहा हैं, समाज इन स्वच्छता देवदूतों कासदैव ऋणी रहेगा।

परियोजना पदाधिकारी आशीष सिंह जी ने कहा जिस समाज को लोग हीन भावना से देखते हैं, उसे विद्यार्थी परिषद् द्वारा सम्मानित किया जा रहा है।यह एक सराहनीय कार्यक्रम है समाज में एक नई पहल है। इस कार्यक्रम के लिए विद्यार्थी परिषद को मैं तहे दिल से शुक्रिया करता हूं। प्रांत के विकासार्थ विद्यार्थी सह संयोजक अंकित स्वामी ने कहा विकासार्थ विद्यार्थी (एसएफडी)समाज को अच्छा वातावरण देने वाले व्यक्तियों का सम्मान कर खुद को गौरवान्वित महसूस कर रही है।कार्यक्रम के मुख्य अतिथि परियोजना पदाधिकारी आशीष सिंह, मुख्य वक्ता प्रांत संगठन मंत्री महेश राठौड़,कार्यक्रम अध्यक्ष पूजा मेरठ प्रांत के एसएफडी के सह संयोजक अंकित स्वामी, महानगर अध्यक्ष राजकुमार जी महानगर मंत्री अमर अग्रवाल के द्वारा दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया।कार्यक्रम में महानगर के स्वच्छता दूत के अलावा काफी संख्या में परिषद् के कार्यकर्ता मौजूद थे। ■

(राष्ट्रीय छात्रशक्ति के लिए मेरठ से दीक्षांत सूर्यवंशी की रिपोर्ट)

छात्र संघ का चुनाव, नोटा और अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद्

| श्रीनिवास |

पिछले दिनों दिल्ली विश्वविद्यालय और जेनयू में छात्र संघ के चुनाव संपन्न हुए, इसके अलावे भारत के अन्य विश्वविद्यालयों में भी चुनाव हुआ, पिछले साल की तुलना में विद्यार्थी परिषद् की शक्ति बढ़ी है, दिल्ली विश्वविद्यालय में अध्यक्ष पद के दहिया ने पिछले सारे प्रतिमान को तोड़ते हुए विद्यार्थी परिषद् के उम्मीदवार के रूप 19 हज़ार की बढ़त से जीत दर्ज की है। 4 में से 3 सेन्ट्रल पैनल विद्यार्थी परिषद् के पास गया है। वहीं जेनयू में विद्यार्थी परिषद् के वोट प्रतिशत में वृद्धि जरूर हुई है, लेकिन सेंट्रल पैनल में कोई स्थान नहीं मिल पाया। इन दोनों विश्वविद्यालय में एक नया ट्रेंड दिखाई दिया वह नोटा का था, जो विश्वविद्यालय की राजनीति को प्रभावित कर रहा है। नोटा राष्ट्रीय राजनीति में भी अपनी साकरात्मक बदलाव पिछले 6 साल में नहीं बना पाया है। 2013 में सर्वोच्च न्यायालय के आदेश से नोटा को लागू किया गया। अभी तक 2 लोक सभा और 42 विधान सभा चुनाव में इसका प्रयोग हो चूका है। जो आंकड़े इक्ट्ठे किये गए हैं, वह नोटा के द्वारा राजनीतिक परिवर्तन की पुष्टि नहीं करते। एक आंकड़े में यह दिखाई देता है की सामान्यतः नोटा जनजाति और अनुसूचित जनजाति के सुरक्षित सीटों में ज्यादा प्रयोग किया गया है। अर्थात सामाजिक समन्वय के लिहाज से यह प्रवृति खतरनाक है। वैसे भी नोटा के वोट काउंट नहीं होते, सैद्धांतिक रूप से नोटा के द्वारा जीत - हार के परिणाम को भी प्रभावित नहीं किया जाता। यह भी व्यवस्था नहीं है कि इतने प्रतिशत मत नोटा में होने के बाद उस सीट के निर्णय को बदल दिया जाएगा। अगर जीतने वाले को 1 भी मत आता है तो वह विजयी माना जाएगा।

विद्यार्थी परिषद् की आगाज कैंपस में अन्य संगठनों से अलग रही है, इसकी सोच भी अलग है। किसी राजनीतिक दल का घटक होने का बोझ भी विद्यार्थी परिषद् पर कभी नहीं रहा। राष्ट्र चिंतन और राष्ट्र के लिए पूर्ण समर्पण ही इसकी इबादत है। राष्ट्र निर्माण में राष्ट्र निर्माताओं के चयन में भी जाति, धर्म और क्षेत्रवाद का सहारा नहीं लिया गया। गाँधी पूजनीय हैं, तो भगत सिंह भी राष्ट्र के सिरमौर हैं। आंबेडकर की सोच भी विद्यार्थी परिषद् की थाती रही। पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम का विज़न 2020 विद्यार्थी परिषद् का एक्शन रहा। यह संगठन वैसे राजनीतिक मुहीम का हिस्सा बना जहाँ से देश को मजबूत बनाया जा सके, खोई हुई सांस्कृतिक विरासत को हासिल किया जा सके। अगर आज अनुच्छेद 370 जम्मू कश्मीर से समाप्त कर दिया गया, तो इसके पीछे परिषद् का ही एक मुहीम था, जिसमे हजारो की संख्या में विद्यार्थी परिषद् के सदस्य विद्यार्थी परिषद् के राष्ट्रीय संगठन मंत्री सुनील आम्बेकरजी के नेतृत्व में कश्मीर गए थे। 2 साल पहले त्रिपुरा में जब वामपंथी सरकार राष्ट्रविरोधी ताकतों को बढ़ावा दे रही थी, तो विद्यार्थी परिषद् ने आंदोलन छेड़ा था। केरल में भी ऐसा ही कुछ हुआ था। परिषद् का विश्वास रहा है कि राजनीतिक परिवर्तन युवाओं के द्वारा ही संभव है। विवेकानद की दृष्टि अचूक थी, उन्होंने कहा था देश को बदलने का काम युवा शक्ति ही कर सकती है। इसलिए विद्यार्थियों को भविष्य का नागरिक नहीं मानना चाहिए, बल्कि वे आज के नागरिक और परिवर्तन के सूत्र हैं।

आपातकाल के दौरान अरुण जेटली और वर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जैसे यूथ लीडर देश को दिया। विद्यार्थी परिषद् की संगठनात्मक ढांचे और अनुशासन को देखकर जेपी भी नतमस्तक हो गए और नेतृत्व के लिए राजी हो गए। विद्यार्थी परिषद् सफलता को अपना ढोल नहीं बनाता और न ही प्रशंसा के पीछे दौड़ता है। जेपी आंदोलन के सफल होने के बाद विद्यार्थी परिषद् कुछ वर्षो तक कैंपस की राजनीति से अपने आप को बाहर रखा, जिससे कोई यह लांछन न लगा दे की परिषद् सत्ता लोभी बन गया है। ठीक यही स्तिथि अण्णा आंदोलन में 2011 में दिखाई दी। जो भीड़ दिल्ली में जमा थी, उसमे से 70 प्रतिशत से अधिक संख्या विद्यार्थी परिषद् का था, यह बात मीडिया या अन्य किसी जगह नहीं आयी। दिल्ली के मुख्यमंत्री इसका सारा श्रेय अपने पास रख लिए। परिषद् को इससे कोई आपत्ति नहीं थी, क्योंकि उसका उद्देश्य

व्यवस्था बदलने को लेकर है न कि पगड़ी पहनने से।

इसलिए कैंपस की राजीनीति नकारात्मक ढांचे की मोहताज नहीं बननी चाहिए। अगर कोई शिकायत हो तो उस पर भी बेबाकी से चर्चा होनी चाहिए। चूंकि कैंपस में चुनी गयी स्टूडेंट कौंसिल एक साल के लिए ही बनती है, अगर विरोध के कारण मोहभंग की स्तिथि बनती है और उस पर कोई चर्चा नहीं होती, तो यह क्षोभ यूथ पॉलिटिक्स के लिए ठीक नहीं है। नोटा का निर्णय उसी क्षोभ का प्रतिफल है। अगर यूथ देश के कर्णधार हैं और उनमे इतना क्षोभ है तो देश की दिशा और दशा कैसे बदलेगी। अगर भगत सिंह या खुदीराम बोस, अशफाकुल्ला खान और चंद्रशेखर आजाद गाँधी के विचारो से रुष्ट होकर चुप हो जाते तो भारत का एक उज्जवल क्रान्तिकारी इतिहास अँधेरे में डूब जाता। अगर आंबेडकर जाति प्रथा से निराश होकर विदेशो में एक सुखमयी जिंदगी जीने को तैयार हो जाते तो आज भारत की तस्वीर कुछ और होती एवं एक ऐसी तारा ,जिसकी चमक आज भी भारतीय राजनीति और समाज को मजबूत बना रहा है, ख़त्म हो चूका होता। इसलिए इस बात की चर्चा राष्ट्रीय स्तर पर जरुरी है कि क्या नोटा कैंपस राजनीति को खोखला नहीं कर रहा है?

दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि कैंपस की और राष्ट्रीय राजनीति की व्यवस्था में अंतर है। कैंपस में जाति, धर्म और लिंग भेद के आधार पर वोटिंग नहीं होनी चाहिए। विद्यार्थी परिषद् इसी मनसूबे के साथ कैंपस की राजनीति करता है। एक साकारात्मक सोच, जिसमें विश्वविद्यालय के गुणवत्ता में विकास और राष्ट्र की गति में विद्यार्थीयों का योगदान हो। अगर दिल्ली विश्वविद्यालय और जेनयू के चुनाव में नोटा के वोट को देखा जाये तो वह दूसरी सबसे बड़ी संख्या है।

कैंपस की राजनीति लोक सभा और विधान सभा की राजनीति से बिलकुल हटकर है। राष्ट्रीय स्तर के नकारात्मक धुर्वीकरण की तस्वीर कैंपस में नहीं दिखनी चाहिए, इसलिए नोटा के जरिये अपने बहुमूल्य मतों को कूड़ेदान में फेकना ठीक नहीं है। चूंकि विद्यार्थी देश के कर्णधार है, उनमें व्यवस्था परिवर्तन की बात साहस और आंदोलन के द्वारा किया जाना चाहिए न कि मतों को बर्बाद करके। ■

(लेखक अभाविप के राष्ट्रीय सह-संगठन मंत्री हैं)

रांची विश्वविद्यालय छात्रसंघ के सभी पदों पर अभाविप की जीत

59 साल के इतिहास में पहली बार किसी संगठन के प्रत्याशी को निर्विरोध चुना गया है

झारखंड के प्रसिद्ध रांची विश्वविद्यालय छात्रसंघ चुनाव में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के उम्मीदवारों ने क्लीन स्वीप किया। बता दें कि अभाविप के द्वारा पांचो पदो पर पर्चा दाखिल करने के बाद किसी भी छात्र संगठन ने पर्चा नहीं भरा क्योंकि बहुमत के आंकड़ों से वे कोसों दूर थे। इस प्रकार सभी पांचो पदो अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव, उपसचिव और संयुक्त सचिव पद पर विद्यार्थी परिषद् के उम्मीदवार निर्विरोध निर्वाचित हुए। अध्यक्ष पद पर नीरज कुमार, उपाध्यक्ष पर बरखा कुजुर, सचिव पर अमिशा सिन्हा, उप सचिव पद पर सौरभ कुमार एवं संयुक्त पद पर डबलू भगत की जीत हुई है। रांची विश्वविद्यालय के छात्र संघ चुनाव में 59 वर्षों का रिकार्ड टूट गया। इससे पहले सभी पदों पर निर्विरोध निर्वाचन कभी नहीं हुआ था। पहली बार किसी पद के लिए दूसरे संगठन के उम्मीदवार ने पर्चा दाखिल नहीं किया। इसके पीछे वजह यह रही कि चुनाव जीतने के लिए अभाविप के पास पर्याप्त आंकड़े थे।

अप्रत्याशित जीत के बाद अभाविप कार्यकर्ताओं में खुली की लहर है, रांची से लेकर मुंबई और दिल्ली तक इस जीत का जश्न मनाया गया। जीत पर खुशी जाहिर करते हुए प्रांत संगठन मंत्री याज्ञवल्क्य शुक्ल ने कहा कि यह जीत संगठन के असंख्य कर्मठ कार्यकर्ताओं के त्याग, निष्ठा, समर्पण और अथक परिश्रम की बदौलत मिली है। वहीं प्रदेश मंत्री रौशन सिंह ने कहा कि रांची विश्वविद्यालय के छात्रों ने साबित कर दिया कि राष्ट्रवाद के आगे कोई भी वाद नहीं चलेगा। उन्होंने कहा कि अभाविप एक मात्र छात्र संगठन है जो 365 दिन परिसर में रहती है। ■

दिल्ली विश्वविद्यालय में फिर से लहराया भगवा

दिल्ली विश्वविद्यालय छात्रसंघ चुनाव में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) ने एक बार फिर अपना परचम लहराया है। अभाविप ने अध्यक्ष, उपाध्यक्ष और संयुक्त सचिव समेत तीन पदों पर जीत हासिल की है, जबकि सचिव पद पर अखिल भारतीय छात्र संगठन (एनएसयूआई) का प्रत्याशी जीता है।

इस बार कुल 39.9 प्रतिशत छात्रों ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया । डूसू में अध्यक्ष पद पर अक्षित दहिया, उपाध्यक्ष पद पर प्रदीप तंवर और संयुक्त सचिव पद पर शिवांगी खरवाल ने बाजी मारी है। वहीं, सचिव पद पर एनएसयूआईके प्रत्याशी आशीष लांबा ने बाजी मारी है।

दिल्ली विश्वविद्यालय छात्रसंघ चुनाव के मुख्य चुनाव अधिकारी द्वारा घोषित चुनाव नतीजों के मुताबिक अध्यक्ष पद पर अभाविप के अक्षित दहिया को कुल 29,685 मत प्राप्त हुए हैं और उन्होंने अपने निकटतम प्रत्याशी एनएसयूआई के चेतना त्यागी को 19,039 मत के बड़े अंतर से हराया है । चेतना त्यागी को मात्र 10,646 मत प्राप्त हुए । वहीं अभाविप के प्रदीप तंवर ने उपाध्यक्ष पद परएनएसयूआई के अंकित भारती को 8,574 मतों के अंतर से हराया । प्रदीप को कुल 19,858 मत मिले जबकि अंकित भारती को 11,284 मत प्राप्त हुए । संयुक्त सचिव पद पर अभाविप की शिवांगी खरवाल ने एनएसयूआई के अभिषेक को हराया । शिवांगी को 17,234 और अभिषेक को 14,320 मत मिले । दिल्ली विश्वविद्यालय में आइसा को इस बार भी करारी हार का सामना करना पड़ा । उसके प्रत्याशी रेस में क कहीं दिखाई ही नहीं दिये । ■

कुछ वर्षों का मतदान प्रतिशत

वर्ष 2011	35.00	वर्ष 2016	37.00
वर्ष 2012	40.40	वर्ष 2017	42.80
वर्ष 2013	43.38	वर्ष 2018	44.46
वर्ष 2014	44.43	वर्ष 2019	39.9
वर्ष 2015	43.30	लगभग	

नीचे देखें किसको कितने मिले वोट–

अध्यक्ष

अक्षित दहिया (ABVP)- 29,685
चेतना त्यागी (NSUI)- 10,646
दामिनि केन (AISA)- 5,886
रोशिनी (AIDSO)- 1,460
नोटा- 5,495

उपाध्यक्ष

प्रदीप तंवर (ABVP)- 19,858
अंकित भारती(NSUI)- 11,284
आफताब आलम (AISA)- 8,217
दिपिन (INSO)- 1,899
आलम (इंडीपेंडेंट)- 3,896
नोटा- 7,879

सचिव

योगित राठी (ABVP)- 18,881
आशीष लांबा (NSUI)- 20,934
विकास कुमार (AISA)- 6804
नोटा- 6507

संयुक्त सचिव

शिवांगी खरवाल (ABVP)- 17,234
अभिषेक छपराना (NSUI)- 14,320
चेतना (AISA)- 10,836
हरीश मलिक (इंडीपेंडेंट)- 3,025
नोटा- 7,695

आरएसएस के दुर्लभ अंदरूनी सूत्र के दृश्य को प्रस्तुत करता है

"द आरएसएस : रोडमैप्स फॉर 21 सेंचुरी"

।डॉ. स्वदेश सिंह।

हाल के वर्षों में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) और उसकी गतिविधियों के बारे में बढ़ती जिज्ञासा देखी गई है। आरएसएस के आसपास का बहुत सारा साहित्य मुख्यतः दो प्रकारों में आता है - पहला, मुख्यधारा के पत्रकारों, शिक्षाविदों और बुद्धिजीवियों द्वारा निर्मित सामग्री जो आरएसएस की अपनी समझ प्रस्तुत करते हैं और मुख्य रूप से उनकी टिप्पणियों को आधार बनाने के लिए समाचार पत्रों की रिपोर्टों का उपयोग करते हैं। दूसरी, बहुत छोटी श्रेणी सहानुभूति रखने वाले लोगों या आरएसएस या इसके किसी सहयोगी के साथ काम करने वाले लोगों द्वारा निर्मित सामग्री की है। केआर मलकानी, नानाजी देशमुख और एच.वी. शेषादरी की रचनाएँ इस श्रेणी में आती हैं।

इस परिदृश्य में, द आरएसएसः रोडमैप्स फॉर 21 सेंचुरी, आरएसएस के एक दुर्लभ अंदरूनी सूत्र के दृश्य को प्रस्तुत करता है।

बचपन में, आंबेकर नागपुर में आरएसएस मुख्यालय के पास रहते थे। उन्होंने संगठन में एक प्रारंभिक दीक्षा प्राप्त की और तब से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के छात्र संगठन अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (ABVP) के राष्ट्रीय संगठन मंत्री तक यात्रा की। उन्होंने उल्लेख किया कि इस पुस्तक की प्रेरणा 2047 में भारत और आरएसएस की कल्पना करने के उनके प्रयासों से उत्पन्न हुई जब देश ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता के 100 वर्षों को चिह्नित करेगा।

इस अर्थ में, पुस्तक आरएसएस के विभिन्न पहलुओं को समझने के लिए एक भविष्यवादी दृष्टिकोण रखती है। अब तक, आरएसएस के आसपास के अधिकांश साहित्य ने अपनी संगठनात्मक संरचना, भाजपा के साथ संबंध, उसकी विचारधारा और हिंदुत्व पर खड़े होने का काम किया है।

हालाँकि, यह पुस्तक एक कदम आगे बढ़कर समकालीन बहस को संबोधित करती है और विभिन्न मुद्दों पर आरएसएस के दृष्टिकोण की पड़ताल करती है। कुछ ज्वलंत मुद्दों पर चर्चा की जाती है जिनमें जाति और सामाजिक न्याय, आधुनिक समय में परिवार प्रणाली, महिलाओं की आवाजाही, गोरक्षा और राम मंदिर शामिल हैं।

आंबेकर इन विषयों पर विचार करने के लिए दर्शन, उपाख्यानों, इतिहास और तथ्यों के मिश्रण का उपयोग करता है। यह पढ़ता है क्योंकि विषय भारी और सीमित स्थान से निपटने के लिए कठिन हैं। पूर्व निर्धारित परिधि से बाहर चर्चा और पुराने तर्कों की रट में पड़ने के लिए यह दृष्टिकोण भी महत्वपूर्ण है।

उदाहरण के लिए, संस्कृत के राजनीतिकरण के विषय पर, वे कहते हैं कि संघ प्राचीन भाषा को एक एकीकृत और एक विरासत का हिस्सा मानता है, और तर्क देता है कि इन संबंधों को संरक्षित करना महत्वपूर्ण क्यों है।

"संस्कृत एक लिंक भाषा है, सभी मंदिरों में प्रार्थना के साथ, केरल में गुरुवायुर हो या असम में कामाख्या मंदिर हो, भाषा में पेश किया जा रहा है। यदि इन संबंधों को तैयार नहीं किया जाता है, तो भाषाई विविधता के प्रतिकूल सामाजिक परिणाम होंगे।"

वह 1994 के सर्वोच्च न्यायालय के फैसले को रेखांकित करता है, जिसमें यह आरोप लगाया गया था कि संस्कृत शिक्षण धर्मनिरपेक्षता के खिलाफ था और भाषा को बढ़ावा देने के संघ के प्रयासों पर चर्चा करता है।

आंबेकर ने एक पूरा अध्याय समर्पित किया है जिसमें जाति से जुड़े मुद्दों के सरगम पर चर्चा की गई है। इस अध्याय में, उन्होंने जाति की उत्पत्ति और संरचना का संकेत दिया है कि जन्म के आधार पर अलगाव और उच्च या निम्न में विभाजन बाद में व्याप्त थे जो जाति के क्षरण के साथ-साथ 'जाति-विवाह' या जाति व्यवस्था में बदल गए थे।

उन्होंने जाति को खत्म करने के लिए महात्मा गांधी के काम का पता लगाया और आरएसएस के संस्थापक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार ने यह सुनिश्चित किया कि सामाजिक न्याय

संघ के लोकाचार में मजबूती से निहित है।

"डॉक्टरजी अपने समय से बहुत आगे थे। अस्पृश्यता और जातिगत वर्जनाओं को संघ से बाहर रखा गया और उन्होंने सभी जातियों के बीच समान संबंधों के आधार पर संघ की शुरुआत की। इसलिए, संघ ने अपने स्थापना दिवस के बाद से फैसला किया कि जाति अपने संगठन के कामकाज में कोई भूमिका नहीं निभाएगी।

वह बताता है कि स्वयंसेवक सभी जातियों से आते हैं और उन्हें समान माना जाता है। उन्हें किसी भी दिन कोई भी काम सौंपा जा सकता है, चाहे वह शौचालयों की सफाई हो, भोजन की तैयारी हो या अध्ययन सत्र का संचालन हो।

जाति के प्रश्न पर खंड यह पता लगाने के लिए आगे बढ़ता है कि परंपरा की ताकत में विश्वास करने के बावजूद, आरएसएस समाज में निरंतर सुधार का प्रबल समर्थक है। इसमें सामाजिक न्याय के प्रति आरएसएस के प्रयासों और कैसे जातिगत पूर्वाग्रह को जड़ से खत्म करने के लिए कार्यक्रम तैयार किए गए और इसकी कल्पना की गई है।

वह सामाजिक समरसता या सामाजिक सद्भाव के बारे में बात करता है जो संघ का मानना हैकिभेदभावऔरसमाजमेंव्याप्तविकृतियोंका मुकाबलाकरसकताहै।इसखंडकेएक बहुतमहत्वपूर्णहिस्सेमें, उन्होंने जाति के नियमों की कठोरता को बनाए रखने के लिए नए प्रोटोकॉल बनाने की आवश्यकता पर चर्चा की।

एक और महत्वपूर्ण अध्याय हिंदुत्व की अवधारणा पर केंद्रित है। आंबेकर ने अपने उत्कर्ष पर इस खंड में इतिहास, कला, साहित्य और सुधारकों से लेकर विभिन्न स्रोतों का बेहतरीन इस्तेमाल किया है। वह हिंदुत्व को हिंदू जीवन शैली कहकर काम करने की परिभाषा प्रदान करता है:

वह इस प्रकार लिखते हैं:

चूंकि यह भारत था जो जीवन के इस तरीके से पैदा हुआ था, हिंदुत्व भारतीय संस्कृति है, जहां संस्कृति का तात्पर्य विभिन्न परंपराओं और प्रकृति

पुस्तक – **द आरएसएस : रोडमैप ऑफ 21 सेंचुरी**
लेखक – श्री सुनील आंबेकर
प्रकाशक – रूपा पब्लिकेशन
कुल पृष्ठ – 248
अंकित मूल्य - 495 रूपये

के साथ लोगों के बीच रिश्तों के नेटवर्क की समझ, सामान्य आत्मा के विस्तार के रूप में है।

हिंदू राष्ट्र, समावेश और जीवन के हिंदू तरीके से संबंधित विचारों में तल्लीनता, वह तीन सूत्र बताते हैं जो हिंदुत्व का समन्वय करते हैं - समन्वय, सहमति और सह-अस्तित्व।

इसे 'संघर्ष-मुक्त दुनिया के लिए 21 वीं सदी का व्याकरण' कहते हुए, वे चर्चा करते हैं कि यह अवधारणा आरएसएस के सभी कार्यों के लिए केंद्रीय है। इस अध्याय में और भी अधिक समसामयिक दृष्टिकोण दिया गया है जिसमें कुछ प्रमुख मुद्दों जैसे कि गौ रक्षा और भारतीय संविधान के अनुच्छेद 30, की संक्षिप्त चर्चा है।

आंबेकर की पुस्तक आरएसएस और उसके कार्यों से परिचित होने वालों के लिए उपयोगकर्ता का मैनुअल है। यह संगठन के इतिहास, यात्रा और आदर्शों को छूने के साथ-साथ मौजूदा विचारों की एक पूरी श्रृंखला को शामिल करता है।

पुस्तक को त्वरित उप-खंडों में विभाजित किया गया है जो पढ़ने और संदर्भ को आसान बनाते हैं। लेखन तर्क के रूप में नहीं है, बल्कि अधिक आराम से, विवेकपूर्ण और ध्यान के प्रारूप में है। यदि आप आरएसएस को समझना चाहते हैं, तो यह पुस्तक सोना है; यदि आप छिद्र करना चाहते हैं - तो आप अपना समय बर्बाद कर रहे हैं।

अब तक, आरएसएस के साहित्य ने वाम-उदारवादी और धर्मनिरपेक्ष ढांचे के भीतर संगठन का आकलन और वर्णन करने का प्रयास किया है। यह पुस्तक भी पहली तरह की है क्योंकि यह आरएसएस को अपने संदर्भ में समझने का प्रयास करती है।

चूँकि यह पुस्तक भविष्य का रूप लेती है, अम्बेकर ने 2047 में भारत और आरएसएस के बारे में अपनी प्रारंभिक पुनरावृत्ति का जवाब दिया। उन्होंने कहा कि तब तक, आरएसएस चीनी की तरह समाज में विलीन हो जाएगा। ■

'द आरएसएसः रोडमैप्स फॉर 21 सेंचुरी' पुस्तक पढ़ने से संघ के बारे में कोई गलतफहमी नहीं रहेगीः भागवत

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के राष्ट्रीय संगठन मंत्री सुनील आंबेकर की पुस्तक 'द आरएसएसः रोडमैप्स फॉर 21 सेंचुरी' किताब का विमोचन करते हुए रा. स्व. संघ के पू. सरसंघचालक श्री मोहन भागवत ने कहा कि यह किताब समाज को संघ दिखाएगी और संघ में चर्चा का विषय भी होगी। उन्होंने कहा, 'संघ पुस्तक से बंधा नहीं है लेकिन पुस्तकें दिशा तो दिखाती हैं, पुस्तक पढ़िए।' साथ ही संघ के बारे में गलतफहमी को दूर करने वाली किताब भी बताया। उन्होंने कहा कि इस किताब को पढ़ने से आपको संघ के बारे में गलतफहमी नहीं होगी। उन्होंने कहा कि, 'हम सबकुछ बदल सकते हैं. सभी विचारधाराएं बदली जा सकती हैं, लेकिन सिर्फ एक चीज नहीं बदली जा सकती, वह यह कि 'भारत एक हिंदू राष्ट्र है'। संघ का आदर्श भगवा है। अगर आपको किसी महापुरूष को आदर्श मानना है तो हनुमान जी, शिवाजी और रा.स्व. संघ के संस्थापक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार जी को मान सकते हैं।

सरसंघचालक ने किसी 'वाद' पर चलने की बात से साफ इंकार करते हुए कहा कि संगठन में एक ही विचारधारा सतत रूप से चलती चली आयी है कि जो 'भारत भूमि की भक्ति' करता है।' उन्होंने कहा कि भारत को अपनी मातृभूमि मानने वाला और उससे प्रेम करने वाला एक भी व्यक्ति अगर जीवित हैं, तब तक हिन्दू जीवित है। भागवत ने कहा कि भाषा, पंथ, प्रांत पहले से ही हैं। अगर बाहर से भी कोई आए हैं, तब भी कोई बात नहीं है। हमने बाहर से आए लोगों को भी अपनाया है। हम सभी को अपना ही मानते हैं। उन्होंने कहा, 'हम देश, काल, परिस्थिति के अनुरूप अपने में बदलाव लाए हैं लेकिन जो भारत भूमि की भक्ति करता है, भरतीयता पूर्ण रूप में उसे विरासत में मिली है, वह हिन्दू है..यह विचारधारा संघ में सतत रूप से बनी हुई है। इसमें कोई भ्रम नहीं है।'

बता दें कि अभाविप के राष्ट्रीय संगठन मंत्री सुनील आंबेकर ने राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ के काम करने के तौर-तरीकों को लेकर एक किताब 'द आरएसएस रोडमैप्स फॉर 21 सेंचुरी' लिखी है। बीते एक अक्टूबर को दिल्ली के जनपथ रोड स्थित डॉ. अंबेडकर इंटरनेशनल सभागार में श्री भागवत इसी किताब के विमोचन के मौके पर बोल रहे थे। आंबेकर ने अपनी इस किताब में रा. स्व. संघ के काम करने से तरीके से लेकर इसकी विचारधारा के बारे में लिखा है। सुनील आंबेकर का मानना है कि संघ 94 साल से समाज को मजबूत कर रहा है। संघ का विरोध करने से पहले इस संगठन को समझना बेहद जरूरी है।

जम्मू-कश्मीर का प्रश्न और बाबा साहेब डॉ. भीम राव आंबेडकर

| डॉ. बलवान गौतम |

15 अगस्त 1947 को भारत ब्रिटिश की गुलामी से आजाद तो हो गया किन्तु साथ में विभाजन का त्रासदी भी छोड़ गया। जम्मू - कश्मीर की रियासत आज भी इस त्रासदी का दंश झेल रही है। यद्यपि जम्मू - कश्मीर के महाराजा हरि सिंह ने उस समय भारत और पाकिस्तान दोनों के साथ यथास्थिति कायम रखने का समझौता किया था। तथापि महाराजा हरिसिंह के लिए तत्कालिन परिस्थितियों में किसी एक को चुनना अत्याधिक कठिन भी था। क्योंकि जम्मू - कश्मीर मुस्लिम बहुल रियासत थी और भारत - पाक विभाजन धर्म के आधार पर हुआ था। जहां एक ओर जम्मू - कश्मीर का व्यापार, शिक्षा एवं अन्य जन सुविधाओं का मुख्य केन्द्र लाहौर था, वहीं दूसरी तरफ नई दिल्ली एवं श्रीनगर के बीच सीधी सड़क सेवा भी उपलब्ध नहीं थी। ऐसी स्थिति में महाराजा हरि सिंह द्वारा जल्दबाजी में लिया गया कोई भी निर्णय आत्मघाती हो सकता था। वैसे भी जम्मू - कश्मीर की रियासत को लेकर पाकिस्तान भलीभांति समझ गया था कि रियासत के महाराजा हर हाल में भारत में ही रहेंगे। महाराजा हरि सिंह ने 1930 के प्रथम गोलमेज सम्मेलन, जो लंदन में हुआ था, स्पष्ट शब्दों में कहा था कि भारत जब एक स्वतंत्र राष्ट्र बनेगा तो वह उसका हिस्सा बनेगा।

इसी स्थिति को भांपते हुए पाकिस्तान ने जम्मू - कश्मीर पर जबरन कब्जा करने का प्रयास किया और पाकिस्तानी सेना ने कबालियों के रूप में 22 अक्टूबर 1947 को जम्मू - कश्मीर पर हमला कर दिया। (दूसरी तरफ जवाहरलाल नेहरू, हरि सिंह से जम्मू - कश्मीर रियासत के विलय पर बातचीत करने के लिए तैयार ही नहीं थे। वे विलय की बातचीत शेख मोहम्मद अब्दुल्ला से ही करना चाहते थे लेकिन यह तभी संभव हो सकता था जब रियासत की संवैधानिक स्थिति में परिवर्तन हो जाता और सत्ता शेख अब्दुल्ला के हाथों में आ जाती। शेख अब्दुल्ला 1946 में 'दोगरों गद्दी छोड़ों' के आंदोलन के चलते तीन साल की कैद काट रहे थे। उन अति संवेदनशील दिनों में नेहरू शेख अबदुल्ला को जेल से छुड़वाकर उसे रियासत की गद्दी पर बिठा देने के राजशाही अभियान में लगे हुए थे। महाराजा हरि सिंह के शब्दों में " प्रधानमंत्री नेहरू शेख अब्दुल्ला को जेल से मुक्त कराने को लेकर ज्यादा चिंतित थे।" नेहरू के ही शब्दों में "विभाजन से पूर्व ही जब अधिकांश रियासतें भारत की संवैधानिक व्यवस्था में विलीन हो रही थी, तब हमने जम्मू - कश्मीर रियासत के विलय को प्रोत्साहित नहीं किया। हमने सुझाव दिया था कि इस विषय पर बाद में जब किसी भीर तरीके से लोगों की राय जान ली जाएगी, तभी विचार किया जाएगा। लोगों की राय जानने के बारे में मेरा सुझाव था कि रियासत में संविधान सभा का गठन किया जाएगा, जिसके माध्यम से विलय व अन्य विषयों पर लोगों की राय सुनिश्चित की जाएगी।" क्रिस्टोफर थॉमस ने भी अपनी पुस्तक 'Fault line Kashmir' में लिखा है कि विभाजन से एक माह पूर्व महाराजा ने अपने प्रधानमंत्री पंडित काक को रियासत के विलय की शर्तों पर बात करने के लिए दिल्ली भेजा लेकिन दिल्ली में काक को स्पष्ट बता दिया कि लोगों की इच्छा जाने बिना विलय का प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया जायेगा। अतः जम्मू - कश्मीर के विलय को लेकर महाराजा हरिसिंह जब भी अपना प्रस्ताव दिल्ली भेजते तो वहां से एक ही जवाब मिलता कि शेख अब्दुल्ला को सत्ता सौंप दो। जवाहरलाला नेहरू की इस दीर्घकालीन परियोजना के चलते ही महाराजा हरि सिंह पर यह आरोप लगाया जाता है कि वे 15 अगस्त से पूर्व भारत की संवैधानिक व्यवस्था में शामिल क्यों नहीं हुए?

अंततः अपनी रियासत और देश के हित में स्वयं बलिदान करते हुए महाराजा ने 26 अक्टूबर 1947 को जम्मू - कश्मीर रियासत का पूर्व एवं विधिवत विलय भारत में किया और नेहरू की जिद को मानते हुए शेख अब्दुल्ला को जम्मू - कश्मीर का प्रधानमंत्री बनाया। विलय के तुरंत बाद पाकिस्तानी घुसपैठियों को बाहर निकालने के लिए केन्द्र सरकार ने भारतीय सेना को जम्मू कश्मीर जाने का निर्देश दिए। सरदार पटेल की भूमिका पर एस. गोपाल अपनी पुस्तक "जवाहरलाल नेहरू की आत्मकथा" में लिखते हैं कि लगभग सारा मंत्रिमंडल अनिर्णय की स्थिति में था और वह सरदार पटेल ही थे जिन्होंने सेनाध्यक्ष

को अन्य लोगों की इच्छा के विरूद्ध श्रीनगर में भारतीय सेना को भेजने का निर्णय लिया। इतना ही नहीं जब भारतीय सेना पाकिस्तानी घुसपैठियों को जम्मू कश्मीर से निकालने को पूरी तरह तत्पर थी और पूरा कश्मीर राज्य को पाकिस्तानी कबालियों से मुक्त कराने के करीब ही थे कि जवाहरलाल नेहरू ने माउंटबेटन क दबाव में आकर युद्ध विराम की घोषणा कर सेना को वापस बुला लिया और अकेले जवाहरलाल नेहरू ने संयुक्त राष्ट्र संघ में जाने का निर्णय लिया। इसके लिए उन्होंने किसी भी भारतीय नेता को विश्वास में नहीं लिया था। एस. के. पाटिल अपनी पुस्तक 'माईइयर्स विद कांग्रेस' में लिखते हैं कि "कश्मीर का मसला सरदार पटेल के भरोसे छोड़ा जाता तो वह कभी भी संयुक्त राष्ट्र में जाने के प्रस्ताव को नहीं मानते।" वस्तुतः जवाहरलाल नेहरू की जम्मू - कश्मीर के संबंध में इन निर्णयों के बीच उनका शेख अब्दुल्ला को पंथ निरपेक्ष मानकर उनपर अत्यधिक विश्वास करना था और साथ ही माउंटबेटन परिवार से उनकी पारिवारिक मित्रता थी, जिसके चलते पूरा जम्मू - कश्मीर ही खतरे में पड़ गया था। इस पृष्टभूमि में बाबा साहेब डॉ. भीमराव आंबेडकर के कश्मीर नीति संबंधी विचार महत्वपूर्ण है। जम्मू - कश्मीर के प्रश्न का एक अन्य दर्दनाक एवं आश्चर्यजनक पहलू यह है कि प्रथम गोलमेज सम्मेलन में महाराजा हरि सिंह की भूमिका ने ब्रिटिश सरकार को चौकन्ना कर दिया। गोलमेज सम्मेलन में सैम्युल होरे को उत्तर देते हुए महाराजा हरि सिंह ने कहा कि "ब्रिटिश सरकार का मित्र होने के नाते हम आपके साथ हैं लेकिन भारतीय होने के नाते हम सब अपनी मातृभूमि, जिसने हमें जन्म दिया और हमारा पालन पोषण किया, के प्रति निष्ठावान ह। हम अपने समस्त देशवासियों के साथ ब्रिटिश राष्ट्रमंडल में अपने देश की सम्मानजनक एवं समान स्थिति की मांग के पक्ष में मजबूती से खड़े हैं।" प्रथम गोलमेज सम्मेलन के बाद जम्मू - कश्मीर में सियासी घटनाक्रम तेजी से बदला और अचानक महाराजा हरि सिंह के खिलाफ विरोध एवं ब्रिटिश षडयंत्रों की आवाज तेज हो गई। शेख अब्दुल्ला ने 1931 से ही जम्मू - कश्मीर में महाराजा हरि सिंह के शासन के विरोध में आंदोलन छेड़ दिया। कांग्रेस की घोषित नीति भारतीय रियासतों के मामले में दखल देने की नहीं थी फिर भी नेहरू इस नीति को दरकिनार करके जम्मू - कश्मीर में शेख अबदुल्ला के आंदोलन में जुड़ गये थे। लेकिन आंबेडकर इस आंदोलन की प्रकृति को अच्छी तरह पहचान गए थे और इससे बिल्कुल भी सहमत नहीं थे। बाबा साहेब अपनी पुस्तक 'पाकिस्तान अथवा भारत की विभाजन' में लिखते हैं कि मुसलमान और अनेक नेताओं ने कश्मीर के प्रतिनिधि सरकार की स्थापना के लिए प्रचंड आंदोलन चलाया था वहीं मुसलमान और अनेक नेता अन्य मुस्लिम रियासतों में प्रतिनिधि सरकारों की व्यवस्था लागू किए जाने के घोर विरोधी हैं। इस विचित्र रवैये का कारण सीधा है। हर मामले में मुसलमानों के लिए निर्णायक प्रश्न यही है कि उससे हिन्दुओं की तुलना में मुसलमानों पर क्या प्रभाव पड़ेगा? वे आगे लिखते हैं कि यदि प्रतिनिधि सरकार से मुसलमानों को सहायता मिलेगी तो वे उसकी मांग करेगें और उसके लिए संघर्ष भी करेंगे। कश्मीर रियासत में शासक हिन्दू है किन्तु बहुसंख्यक जनता मुसलमान है। कश्मीर में मुसलमानों ने इसलिए संघर्ष किय जिससे कश्मीर में सत्ता हिन्दू राजा से मुस्लिम आवाम के हाथों आ जाए। अन्य मुस्लिम रियासतों में शासक मुसलमान है किन्तु बहुसंख्यक जनता हिन्दू है। ऐसी रियासतों प्रतिनिधि सरकार का अर्थ होगा - राजनीतिक सत्ता का मुसलमान शासकों से खिसककर हिन्दुओं के हाथों में आ जाना। इसीलिए मुसलमान एक स्थान पर तो प्रतिनिधि सरकार की मांग करते हैं और दूसरे स्थान पर उसका विरोध करते हैं।" अब्दुल्ला के इस तथाकथित आंदोलन की बाबा साहेब बहुत ही पारदर्शी विश्लेषण किया है। (अग्निहोत्री 101)

अतः बाबा साहेब डॉ. आंबेडकर जम्मू - कश्मीर रियासत को अन्य रियासतों की तरह ही मानकर चलते थे और उसके लिए भारतीय संविधान में अनुच्छेद 370 के प्रावधान के पक्ष में नहीं थे। किन्तु जम्मू - कश्मीर के अंतिरिम प्रधानमंत्री चाहते थे कि राज्य को खास तरीके का विशेष दर्जा दिये जाने का प्रावधान किया जाए। अतः नेहरू की सलाह पर शेख अब्दुल्ला डॉ. आंबेडकर से मिलने गए। तब डॉ. आंबेडकर ने स्पष्ट शब्दों में शेख से कहा कि - "आप चाहते हो कि भारत आपकी सीमाओं की रक्षा करे, आपके क्षेत्र में सड़कें बनवाए लेकिन आप यह भी चाहते हो कि कश्मीर का दर्जा भारत के समकक्ष हो। इतना ही नहीं, भारत सरकार का कश्मीर में प्रवेश सीमित हो और भारत अन्य नागरिकों के कश्मीर क्षेत्र में कोई अधिकार न हो। आपके इस प्रस्ताव पर सहमति देना देश के साथ विश्वासघात होगा। भारत के विधि मंत्री होने के नाते मैं यह कभी नहीं करूंगा।" इस प्रकार जब डॉ. आंबेडकर ने शेख के प्रस्ताव को सिरे से खारिज कर दिया तो अंततः जवाहरलाल नेहरू के विश्वसनीय गोपाल स्वामी आंयगर ने जम्मू - कश्मीर राज्य के संबंध में अस्थायी अनुबंध 306 (1) (जो बाद में अनुच्छेद 370 हुआ) को राज्य में युद्ध के कारण विशिष्ट परिस्थियों का हवाला देकर संविधान सभा में पेश किया। तब इस अनुच्छेद पर संविधान सभा में बहस के दौरान सरदार पटेल और डॉ. आंबेडकर खामोश बैठे रहे। यद्यपि अनुच्छेद 370 जम्मू -

कश्मीर राज्य के लिए एक अस्थायी व्यवस्था की गई थी, जिसका काम संविधान सभा के अभाव में जम्मू - कश्मीर में भारतीय संविधान को लागू करने की तात्कालीक एवं अंतिरम व्यवस्था थी।

कश्मीर के प्रश्न को लेकर बाबा साहेब की वेदना यहीं समाप्त नहीं होती है। 10 अक्टूबर 1951 को केन्द्रीय मंत्री मंडल से इस्तीफे के कारणों को लेकर उनका वक्तव्य नेहरू की कश्मीर नीति पर गहरे सवाल उठाते हैं। बाबा साहेब का मानना था कि यदि जवाहरलाल नेहरू को यह लगता था कि जम्मू - कश्मीर का मसला सुरक्षा परिषद में ले जाना बहुत जरूरी है तो भी यह मामला संयुक्त राष्ट्र संघ के चार्टर के छठे अध्याय की बजाय आठवें अध्याय के अंतर्गत ले जाना चाहिए था। आठवां अध्याय उन मामलों से संबंधित है जब संयुक्त राष्ट्र संघ का कोई एक देश दूसरे सदस्य देश पर आक्रमण कर देता है। जम्मू - कश्मीर के मामले में भी पाकिस्तान ने भारत के एक हिस्से पर आक्रमण किया हुआ था। संयुक्त राष्ट्र का छठा अध्याय संयुक्त राष्ट्र संघ के दो सदस्य देशों के बीच किसी विवादग्रस्त मामले को शांतिपूर्ण तरीके की मध्यस्थता से सुलझाने से संबंधित है। जम्मू - कश्मीर भारत और पाकिस्तान के बीच विवादग्रस्त मामला नहीं था बल्कि यह भारत स्वतंत्रता अधिनियम 1947 के प्रावधानों के अंतर्गत विधिपूर्वक देश की संवैधानिक व्यवस्था में शामिल हुआ था। अतः बाबा साहेब को इस बात का गहरा मलाल था कि 15 अगस्त 1947 को जब हमने आजाद देश के रूप में अपनी यात्रा प्रारंभ की तो सभी देश की सदभावना हमारे साथ थी। दुनिया का हर देश हमारा मित्र था। आज केवल चार साल में ही हमारे सभी मित्र हमें छोड़ गए हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ में हमारे प्रस्तावों का समर्थन करने वाला एक देश भी नहीं है। जम्मू - कश्मीर के मामले में भारत का पक्ष न्यायपूर्ण होते हुए भी दुनिया का कोई भी देश भारत के पक्ष में खड़ा नही हुआ। भारतीय विदेश नीति, जिसके जनक स्वयं नेहरू थे, अपनी विफलता का रोना सुरक्षा परिषद में रो रही थी।

वैसे तो समान्य हालतों में महाराजा हरि सिंह द्वारा जम्मू - कश्मीर रियासत को देश की नई सांविधानिक व्यवस्था में शामिल किये जाने के बाद जम्मू - कश्मीर का प्रश्न खत्म हो जाना चाहिए था किन्तु जवाहरलाल नेहरू की अदूरदर्शिता एवं हठधर्मिता के चलते डॉ. आंबेडकर के मन में जम्मू - कश्मीर के भविष्य को लेकर खासकर वहां के हिन्दू - सिक्ख, बौद्ध, गुज्जर, शिया इत्यादि को लेकर चिंता होने लगी थी। नेहरू ने संयुक्त राष्ट्र संघ में जम्मू - कश्मीर के मसले को भेजकर उसे उलझा ही नहीं दिया था बल्कि देश में घूम - घूम कर घोषणा भी कर रहे थे कि जनमत संग्रह ही जम्मू - कश्मीर समस्या का समाधान है और यदि जनमत संग्रह का परिणाम विपरीत गया तो जम्मू - कश्मीर भारत का अंग नहीं रहेगा। अतः 1951 के उस हालात में बाबा साहेब ने जम्मू - कश्मीर रियासत के विभाजन का सुझाव देकर अपनी यथार्थ चिंताओं की अभिव्यक्ति की है। बाबा साहेब का मानना है कि "जम्मू - कश्मीर विवाद का मुख्य मुद्दा कौन गलत है और कौठ ठीक है, इसी को लेकर है लेकिन मेरे विचार से मुख्य प्रश्न यह नहीं है कि कौन ठीक है? मुख्य प्रश्न यह है कि क्या ठीक है? यह सिद्धांत मान लिया जाए कि क्या ठीक है तो मेरी राय में जम्मू - कश्मीर का विभाजन ही ठीक है। जैसै हमने हिन्दू और मुसलमान को देश के आधार पर बांट दिया, उसी के आधार पर हिन्दू - बौद्ध हिस्से भारत मे रहे और मुस्लिम हिस्से पाकिस्तान मे चले जाएं। हमें कश्मीर के मुस्लिम की चिंता नहीं करनी चाहिए। यह कश्मीर के मुसलमानों एवं पाकिस्तान के बीच का मसला है। वे इस प्रश्न का जैसा भी निर्णय चाहे ले सकते हैं। यदि आपको ठीक लगता है तो पूरा क्षेत्र तीन हिस्सों में बांटा जा सकता है। युद्ध विराम जोन, कश्मीर घाटी और जम्मू - लद्दाख जोन। इसमें भी अगर उनकी इच्छा हो तो जनमत संग्रह केवल कश्मीर घाटी में करवाया जाना चाहिए। मुझे सबसे ज्यादा डर इस बात का है कि प्रस्तावित जनमत संग्रह, जो समग्र जनमत संग्रह बन जाता है, में तो हिन्दूओं और बौद्धों को बिना उनकी इच्छा के बलपूर्वक पाकिस्तान में धकेल देना ही माना जा सकता है। इससे हमें कश्मीर में भी उन्हीं समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है, जो हम इतने अरसे से पूर्वी बंगाल में सामना कर रहे थे।" (नरेन्द्र जाधव)

वस्तुतः कश्मीर के विभाजन को लेकर बाबा साहेब की चिन्ताएं एकाकी नहीं है। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी, मास्टर तारचंद, प्रेमनाथ डोगरा जैसे सरीखे राष्ट्रवादी नेता जम्मू - कश्मीर को लेकर चिंतित थे। स्वयं भारत के गर्वनर जनरल माउंटबेटन, किसी भी कीमत पर पाकिस्तान को देने में रचते रहते थे। पूरा पंजाब और बंगाल पाकिस्तान में जाए, यही ब्रिटिश नीति थी। अतः पंजाब और बंगाल को पाकिस्तान में जाने से बचाने के लिए उसे विभाजित कराकर आधा - आधा प्रांत भारत मे रह सका, इसका श्रेय डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी और पंजाब के नेतृत्व को जाता है। इस दृष्टि से जम्मू - कश्मीर के हालत भी बंगाल और पंजाब जैसे ही थे। इसी तर्ज पर बाबा साहेब भी हिन्दू एवं बौद्ध हिस्से भारत में बचा लेना चाहते थे। ■

(लेखक, हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय के आंबेडकर पीठ में पीठाधीश हैं।)

ABVP's HISTORIC STUDENTS' RIGHT-RALLY IN TRIPURA

Dr. Tushaar Kanti Acharjee

Eventually the awaited ultimate agitation ` has been the reality on the Raj-path of RajdhaniAgartala, in the state of Tripura. The street rally has indeed created history in the state of Tripura since no other students organisation could demonstrate such a huge and enormous rally before. Students of all the twenty-two colleges across the state have actively participated and had been completely able to outburst their dormant languishments over many important burningissues which had been neglected for last two decades, in the tarnished reign of left government.

The prime and foremost demand was to hold student council election in the colleges of Tripura to help resolve all the persisting issues like providing pure drinking water, installing CCTV Cameras, setting up Active placement cell, disbursing scholarship on time, arrangement for the fair admission process. Upgradation of college lavatories and proper sanitation level.

Students although were demanding for the aforementioned burning issues to resolve for decades but would have been getting ignored and betrayed by the lefties rather there were utterly different kinds of exploitation and malpractices happened to be I consequences. Here was panic ad havoc among the students.

Besides, it must be mentioned that almost all the college councils were the hub of all destructive planning and indulgence.

AkhilBhartiyaVidyarthiParishad students from all the twenty-twocollegesamassed at the most popular and heart of Rajdhanii Agartala Rabindra Shatabarshiki Bhawan-front and initiated the historic rally on the raj path of rajdhani; Agartala.ABVP karyakartasdemonstrated their demands and took round the prime route of Agartalacity and trembled in demands to hold Students Council election immediately.

Almost five thousand Five hundred Karyakartas took part in the protest rally and formed the unprecedented Students Council election immediately.

Almost five thousand Five hundred Karyakartas took part in the protest-rally and formed the unprecedented and vibrant rally and virtually the roar of demands has shaken the Rajdhani and succeeded to draw the serious attentionof education minister, Shri RatanlalNathto hand the charter of demands who assured to materialize the demands soon besides holding Students Council Election at earliest. ■

प्रा. यशवंतराव केलकर युवा पुरस्कार
विद्यार्थी निधि एवं अभाविप का संयुक्त उपक्रम

क्र.	वर्ष	विषय	प्राप्तकर्ता	अतिथि
1.	1991	महिला सामाजिक कार्यकर्ता	श्रीमति इंदुमती राव (कर्नाटक)	
2.	1992	ग्राम विकास में तकनीकी का प्रयोग	श्री संतोष गोंधलेकर (महाराष्ट्र)	श्री कल्याण सिंह (मुख्यमंत्री उ.प्र.)
3.	1993	वनवासियों के विकास हेतु कार्य	श्रीमति उबती रियांग (असम)	
4.	1994	पारंपरिक तकनीकी संरक्षण एवं विकास	श्री सुधाराम बिरजिया, श्री रामवृक्ष लोहार (बिहार)	प्रा. राजकुमार भाटिया (राष्ट्रीय अध्यक्ष)
5.	1995	औषध वनस्पतियों का संरक्षण एवं संवर्धन	श्री रामदास पालेकर (महाराष्ट्र)	डा. ओमप्रकाश बहल (पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष)
6.	1996	झुग्गी झोपड़ी निवासियों का विकास	श्री विश्वनाथ बेन्द्रे (महाराष्ट्र)	डा. सुदर्शन (प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता)
7.	1997	पत्रकारिता के द्वारा सामाजिक जागरण	श्री समीप कुमार दास (असम)	श्री सुरेन्द्र महेता (अंतरराष्ट्रीय शाकाहारी कांग्रेस के अध्यक्ष)
8.	1998	शहरी पर्यावरण का संरक्षण एवं संवर्धन	श्री अनिल मेहता (राजस्थान)	श्री नाना पाटेकर (प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता)
9.	1999	संस्कृत का विकास	श्री पी. नंदकुमार (केरल)	प्रा. दिनेशानंद गोस्वामी (राष्ट्रीय अध्यक्ष)
10.	2000	गो संरक्षण, संवर्धन एवं अनुसंधान	डॉ. रमाकांत भोपले, अकोला(विदर्भ)	श्री हरिभाई जोशी (मध्यप्रदेश गो आयोग के सदस्य)
11.	2001	भारतीय लोक संगीत का संवर्धन एवं लोकप्रियकरण	श्रीमति लक्ष्मीकुमारी (बिहार)	श्री जाहनु बरूआ
12.	2002	गैर पारंपरिक ऊर्जा का व्यावसायिक उपयोग	डॉ. प्रियादर्शनी कर्वे, पुणे (महाराष्ट्र)	श्रीमति पी.टी. उषा (एशिया की प्रमुख धाविका)
13.	2003	कुष्टरोगियों एवं उनके शिक्षा व चिकित्सा हेतु कार्य	श्री आशीष गौतम (उत्तरांचल)	श्री कैलाशपति मिश्रा (राज्यपाल, गुजरात)
14.	2004	बांस वस्तु निर्माण तथा उसे बाजार उपलब्धता हेतु कार्य	श्रीमति निरूपमा देशपांडे, श्री सुनिल देशपांडे (विदर्भ)	डा. महेश शर्मा (अध्यश्र खादी आयोग)
15.	2005	सेंद्रीय कृषि प्रवर्तन एवं ग्रामविकास हेतु कार्य	श्री ए.एस. आनंद, श्री व्ही.के.अरूणकुमार (कर्नाटक)	श्री सोमपाल शास्त्री (भूतपूर्व राज्यमंत्री)
16.	2006	बाजार लैंगिक शोषित महिलाओं तथा उनके बच्चों का प्रबोधन पुनवर्सन एवं सामाजिक पूर्नगठन	डॉ गिरीष कुलकर्णी अहमदनगर (महाराष्ट्र)	डा. दयानंद डोणगावकर (महासचिव भारतीय विश्वविद्यालय संघ)
17.	2007	सुरक्षा से संबंधित पथ दर्शक प्रणाली के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता के सफल प्रयास कर्ता	जी.सतीश रेड्डी, हैदराबाद (आंध्रप्रदेश)	डा. के.आई.वासु (राष्ट्रीय अध्यक्ष, विज्ञान भारती)
18.	2008	महिला एवं बच्चों के लिये गरीबी निर्मूलन, (संपूर्ण) देखभाल तथा सुरक्षा प्रदान करने हेतु	श्रीमति ओईनम इंदिरा देवी (असम)	पद्मश्री डा. भंवरलाल जैन (फाउन्डर, जैन इरिगेशन)
19.	2009	रोजगार निर्माण व ग्रामीण विकास	श्रीमति नंदिता पाठक (मध्यप्रदेश)	प्रा. बाल आपटे (राज्यसभा सदस्य)
20.	2010	समाज के गरीब एवं पिछड़ें वर्ग के प्रतिभावान छात्रों के लिए सुपर 30 जैसे महत्वकांक्षी तथा नावीन्यपूर्ण शैक्षिक कार्यक्रमों के सफल संचालक	श्री आनंद कुमार (बिहार)	डा. रसुल पौकट्टी (सुप्रसिद्ध संगीतकार एवं ऑस्कर पुरस्कार विजेता)
21.	2011	अनाथ एवं निराश्रित बच्चों का अनूठे रूप से मातृत्व अंगीकार करते हुए उनके पुर्नवास हेतु	श्री मनन चतुर्वेदी (राजस्थान)	जस्टिस आर. सी. लाहोटी (पूर्व मुख्य न्यायाधीश, सर्वोच्च न्यायालय)
22.	2012	ग्रामीण एवं पिछड़े क्षेत्रों में जनसहभाग से संपोषित ग्राम विकास	डा. प्रसाद देवधर सिंधदुर्ग (महाराष्ट्र)	मा. भैय्याजी जोशी (सरकार्यवाह, रा. स्व. संघ)
23.	2013	असहाय, बीमार, बेघर, मानसिक रूप से कमजोर और निराश्रितों की देखभाल, उनको स्वस्थ भोजन और मानव गरिमा बहाल करने के लिए पुनर्वास के उल्लेखनीय काम को मान्यता प्रदान करने हेतु	श्री एन. कृष्णन (तमिलनाडू)	प्रा. कपिल कपूर (पूर्व उपकुलपति, जे.एन.यू. - दिल्ली)

24.	2014	कृत्रिम पैर के साथ दुनिया की सबसे ऊंची चोटी को जीतने की ऐतिहासिक उपलब्धि, सभी बाधाओं के खिलाफ लड़ने की दृढ़ इच्छाशक्ति तथा समर्पित भाव से सामाजिक कार्य के सम्मान में	सुश्री अरूणिमा सिन्हा (आम्बेडकर नगर, ऊ.प्र.)	सुश्री स्मृति ईरानी (केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री)
25.	2015	प्लास्टिक, ठोस अनुपयोगी साम्रगी का प्रबंधन एवं कूड़ा बिनने वालों के उत्थान परियोजना की परिकल्पना की दिशा में उल्लेखनीय योगदान	श्री इम्तियाज अली (भोपाल, मध्य प्रदेश)	श्री धर्मेन्द्र प्रधान (केन्द्रीय पेट्रोलियम मंत्री)
26.	2016	नशा एवं एड्स से मुक्ति की लड़ाई तथा आध्यात्म एवं नियमित व्यायाम द्वारा स्वस्थ व चरित्रवान युवाओं का निर्माण के अग्रणी कार्य के सम्मान में	श्री आर.के. विश्वजीत सिंह (ईम्फाल, मणीपुर)	श्री मनोहर परिकर (रक्षामंत्री, भारत सरकार) श्रीमति सोनल मानसिंह (पद्मविभूषण एवं ओडीसी नृत्यांगना)
26.	2017	बच्चों की देखभाल सुरक्षा एवं विकास	श्री आर. गोपीनाथ बैंगलुरू	श्री जगत प्रकाश नड्डा(स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री भारत सरकार), श्री सुरेश रैना (प्रख्यात क्रिकेटर भारत)
28	2018	शिक्षा में नवाचार और बच्चों को बस्ता मुक्त करने के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान हेतु	श्री संदीप जोशी	उपराष्ट्रपति एम. वैंकेया नायडू

पटना में आयोजित शोध कार्यशाला सम्पन्न

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री श्रीनिवास ने कहा कि आज के शोध को सार्थक बनाने पर जोर देना होगा। शोध को केवल उपाधि प्राप्ति तक सीमित नही करना चाहिए। हमें अपने शोध में भारतीय दर्शन, भारतीय संस्कृति, भारतवासियों की आवश्यकताओं एवं आकांक्षाओं को प्रतिबिंबित करने की जरूरत है। हमारी शिक्षा प्रणाली का लाभ लेने पूरे विश्व से लोग आते थे। हमारी शिक्षा प्रणाली भारतीय रही है। शिक्षा के भारतीयकरण का सर्वश्रेष्ठ उपाय यही है कि हमे भारतवर्ष के विभिन्न आचार्यों एवम शिक्षाविदों के विचारों का अध्ययन करना होगा। उनमें से शिक्षा के विभिन्न अंगों, उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि आदि से सम्बंधित तत्वों एवम सिद्धांतों का चयन कर अपने शोध में शामिल करना होगा। वे अभाविप द्वारा पटना में आयोजित 'शोध'संगोष्ठी को संबोधित कर रहे थे।

वहीं महात्मा गांधी केंद्रीय विवि मोतिहारी के अधिष्ठाता डॉ अरुण भगत ने कहा कि शिक्षा के शोध की भूमिका सदैव राष्ट्र निर्माण में अहम रही है। हमें अपने शोध का चयन भारतीयों की आवश्यकताओं एवं आकांक्षाओं की दृष्टि से करना होगा। भारतीय मौसम विभाग के अध्यक्ष व दक्षिण बिहार केंद्रीय विवि के प्राध्यापक डॉ प्रधान पार्थसारथी ने कहा कि आज शोध का उद्देश्य थोड़ा बदल सा गया है। जाति, क्षेत्र का बोलबाला हो गया है। इससे हमारा शोध सार्थक नहीं हो सकता। व्यक्ति का सर्वांगीण विकास तथा राष्ट्र का सर्वांगीण विकास शिक्षा के आधारभूत उद्देश्य होने चाहिए। कार्यक्रम के प्रारंभ में विषय प्रवर्तन करते हुए अखिल भारतीय शोध प्रमुख डॉ आलोक पांडेय ने कहा कि शोध का निर्माण शोधार्थियों को एक मंच देने के लिए किया गया है। यहां शोधार्थियों के आवश्यकताओं, उनके शोध सम्बन्धित जरूरतों, उनके इंटर्नशिप आदि का ख्याल रखा जाता है। कार्यक्रम का संचालन बिहार शोध प्रमुख गौरव रंजन ने एवम धन्यवाद ज्ञापन कृष्णा अनुराग ने किया। कार्यक्रम का आयोजन शहर के विश्व संवाद केंद्र सभागार में आयोजन किया गया था। कार्यक्रम का उदघाटन अभाविप के राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री श्रीनिवास, भारतीय मौसम विभाग के अध्यक्ष डॉ प्रधान पार्थसारथी, प्रबुद्ध साहित्यकार एवम महात्मा गांधी केंद्रीय विवि मोतिहारी के अधिष्ठाता डॉ अरुण भगत एवं अखिल भारतीय शोध कार्य प्रमुख डॉ आलोक पांडेय ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर बिहार - झारखंड के क्षेत्र संगठन मंत्री निखिल रंजन, बिहार प्रान्त संगठन मंत्री डॉ सुग्रीव कुमार, सह संगठन मंत्री अजीत उपाध्याय, विशेष आंमत्रित सदस्य प्रो नरेंद्र सिंह सहित बिहार के 11 राज्य विश्वविद्यालय, 3 केंद्रीय विश्वविद्यालय एवं 2 अखिल भारतीय संस्थानों के 70 शोधार्थियों ने भाग लिया। ■

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद्

राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं महामंत्री की सूची

अधिवेशन वर्ष	अधिवेशन स्थान	राष्ट्रीय अध्यक्ष	महामंत्री
1949	दिल्ली	श्री ओमप्रकाश बहल	श्री केशवदेव शर्मा
1950	-	श्री लाला राम गुप्ता	श्री नरेश जौहरी
1951	-	-	-
1952	-	प्रा. वेद प्रकाश नंदा	-
1953	-	-	-
1954	-	डॉ. सुरेन्द्र मित्तल	-
1955	-	-	-
1956	सागर	प्रा. वेदप्रकाश नंदा	श्री नकुल भार्गव
1957	जालधंर	प्रा. वेदप्रकाश नंदा	श्री नरेश जौहरी
1958	आगरा	प्रा. वेदप्रकाश नंदा	डॉ. मुरली मनोहर जोशी
1959	मुंबई	प्रा. वेदप्रकाश नंदा	श्री माधव परलकर
1960	जबलपुर	प्रा. हरिवंश लाल ओबराय	श्री माधव परलकर
1961	प्रयाग	प्रा. हरिवंश लाल ओबराय	श्री विजय मंडलेकर
1962	दिल्ली	प्रा. वी. त्रागराजन	श्री विजय मंडलेकर
1963	ग्वालियर	डॉ. एम. वी. कृष्णराव	श्री रामकृष्ण मिश्र
1964	नागपुर	प्रा. दत्ताजी डिडोलकर	श्री रामकृष्ण मिश्र
1965	मुंबई	प्रा. गिरिराज किशोर	श्री रामकृष्ण मिश्र
1966	कानपुर	-	श्री भोलानाथ विज
1967	इन्दौर	प्रा. यशवंतराव केलकर	श्री विकास भट्टाचार्य
1968	हैदराबाद	प्रा. नारायण भाई भंडारी	श्री संगमेश्वर रेड्डी
1969	कलकत्ता	श्री पद्मनाभ आचार्य	श्री व्ही रविकुमार
1970	त्रिवेन्द्रम	प्रा. दत्ताजी डिडोलकर	श्री राजकुमार भाटिया
1971	दिल्ली	प्रा. दत्ताजी डिडोलकर	श्री राजकुमार भाटिया
1972	पटना	-	श्री राजकुमार भाटिया
1973	अहमदाबाद	श्री नटकर लाल राजगुरू	श्री राजकुमार भाटिया
1974	मुंबई	श्री बाल आप्टे	श्री पिरट्ला वैंकटेश्वरलू
1975	आपातकाल		
1976			
1977	वाराणसी	श्री बाल आप्टे	श्री महेश शर्मा
1978	बैंगलोर	श्री बाल आप्टे	श्री महेश शर्मा
1979	जयपुर	प्रा. पी. वी. कृष्ण भट्ट	श्री महेश शर्मा
1980	रायपुर	प्रा. पी. वी. कृष्ण भट्ट	श्री महेश शर्मा
1981	हुबली	प्रा. पी. वी. कृष्ण भट्ट	श्री महेश शर्मा

1982	नागपुर	प्रा. ओमप्रकाश कोहली	श्री दत्तात्रेय होसबाले
1983	राजकोट	प्रा. ओमप्रकाश कोहली	श्री सुशील कुमार मोदी
1984	पटना	प्रा. ओमप्रकाश कोहली	श्री सुशील कुमार मोदी
1985	दिल्ली	प्रा. अशोक मोडक	श्री सुशील कुमार मोदी
1986	विशाखापट्टनम	प्रा. अशोक मोडक	श्री हरेन्द्र कुमार
1987	आगरा	प्रा. अशोक मोडक	श्री हरेन्द्र कुमार
1988	मुंबई	प्रा. अशोक मोडक	श्री हरेन्द्र कुमार
1989	पटना	प्रा. रामस्नेही गुप्त	श्री हरेन्द्र कुमार
1990	हैदराबाद	प्रा. राजकुमार भाटिया	श्री चंद्रकांत पाटिल
1991	जयपुर	प्रा. राजकुमार भाटिया	श्री चंद्रकांत पाटिल
1992	कानपुर	प्रा. राजकुमार भाटिया	श्री चंद्रकांत पाटिल
1993	भुवनेश्वर	प्रा. राजकुमार भाटिया	श्री विनोद तावड़े
1994	इंदौर	प्रा. राजकुमार भाटिया	श्री वी मुरलीधरन
1995	नागपुर	डॉ. डी. मनोहर राव	श्री वी मुरलीधरन
1996	बैंगलोर	डॉ. डी. मनोहर राव	श्री महेन्द्र कुमार
1997	चेन्नई	डॉ. डी. मनोहर राव	श्री महेन्द्र कुमार
1998	मुम्बई	श्री दिनेशानंद गोस्वामी	श्री अतुल कोठारी
1999	लखनऊ	श्री दिनेशानंद गोस्वामी	श्री अतुल कोठारी
2000	गुवाहाटी	श्री दिनेशानंद गोस्वामी	श्री अतुल कोठारी
2001	रायपुर	श्री कैलाश शर्मा	श्री रमेश पप्पा
2002	कोषिकोड(केरल)	श्री कैलाश शर्मा	श्री रमेश पप्पा
2003	कर्णावती(गुजरात)	श्री कैलाश शर्मा	श्री के. एन. रघुनंदन
2004	जयपुर	श्री कैलाश शर्मा	श्री के. एन. रघुनंदन
2005	भोपाल	श्री कैलाश शर्मा	श्री के.एन. रघुनंदन
2006	हैदराबाद	डॉ. रामनेरश सिंह	श्री सुरेश भट्ट
2007	कानपुर	डॉ. रामनरेश सिंह	श्री सुरेश भट्ट
2008	जलगांव	प्रा. मिलिंद मराठे	श्री विष्णु दत्त शर्मा
2009	ऊना(हि.प्र.)	प्रा. मिलिंद मराठे	श्री विष्णु दत्त शर्मा
2010	बैंगलोर	प्रा. मिलिंद मराठे	श्री उमेश दत्त
2011	दिल्ली	प्रा. मिलिंद मराठे	श्री उमेश दत्त
2012	पटना	प्रा. मुरली मनोहर	श्री उमेश दत्त
2013	काशी	प्रा. मुरली मनोहर	श्री श्रीहरिबोरिकर
2014	अमृतसर	डॉ. नागेश ठाकुर	श्री श्रीहरिबोरिकर
2015	भुवनेश्वर	डॉ. नागेश ठाकुर	श्री विनय बिदरे
2016	इंदौर	डॉ. नागेश ठाकुर	श्री विनय बिदरे
2017	रांची	डॉ. एस. सुबैय्या	श्री आशीष चौहान
2018	कर्णावती	डॉ. एस. सुबैय्या	श्री आशीष चौहान

छात्र आंदोलनों में हिंसा की स्वीकृति उचित है क्या?

देश – दुनिया में छात्र आंदोलनों का लंबा इतिहास रहा है। आजादी के पूर्व भारत छोड़ो आंदोलन हो या निरकुंशता के खिलाफ संपूर्ण क्रांति हो,सभी आंदोलनों में छात्रों की महत्ती भूमिका रही है लेकिन पिछले कुछ दिनों से जो जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में हो रहा है उसे देखकर कोई भी विचलित हो सकता है। जिस देश में गुरु को भगवान से भी ऊपर माना गया है, जिसकी पूजा की जाती है उसी देश के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय में रात के 1 बजे उनके घरों पर कुछ छात्रों के समूह द्वारा हमला किया जाता है और कहा जाता है आप हमारे साथ होस्टल मेस में चलें। जब वार्डन दबाव में मेस में जाता है तो उसे ख़ूब बेइज्जत किया जाता है और जबरन उनसे इस्तीफ़े की मांग की जाती है। विश्वविद्यालय के डीन छात्र कल्याण की अचानक तबियत ख़राब हो जाती हैं तो उनकी एम्बुलेंस को ज़बरन रोका जाता है। 32 घंटों तक एक महिला डीन को बंधक बना कर रखा जाता है। फिर जब पुलिस उनको निकालने की कोशिश करती है तो महिला डीन के कपड़े फाड़ने तक का प्रयास किया जाता है। इसके अलावा बीते 14 नवम्बर को जेएनयू के प्रशासन परिसर के समीप लगी स्वामी विवेकानंद जी की प्रतिमा को कुछ छात्रों के द्वारा क्षतिग्रस्त करने का प्रयास हुआ । प्रतिमा के इर्द–गिर्द भगवा हो बर्बाद, भगवा जलेगा जैसे नारों को लिखा गया । प्रशासन बिल्डिंग में घुस कर कुलपति,प्रति–कुलपति के ऑफ़िस की दीवारों पर विभिन्न भाषाओं में अपशब्द लिखे गए। क्या इसको हम छात्र आंदोलन कह सकते हैं? छात्रों आंदोलनों में हिंसा की स्वीकृति उचित है क्या? उपरोक्त विषय पर 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' के संवाददाता ने देशभर के लोगों से बात की और उनके विचार जाने। प्रस्तुत है कुछ चुनी हुई प्रतिक्रियाएं –

छात्र आंदोलनों का लंबा इतिहास रहा है लेकिन आंदोलन की आड़ में हिंसा की स्वीकृति नहीं दी जा सकती है। साथ ही अभिव्यक्ति की आजादी के आड़ में महापुरूषों का अपमान भी बर्दाश्त से बाहर है। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में पिछले दो सप्ताह से पढ़ाई के अलावा सब कुछ हो रहा है। यहां के कुछ छात्रों पर देश विरोधी नारों का आरोप है। गरीबी और पिछड़ापन की दुहाई देने वाले जेएनयू के वामपंथी छात्रों से मैं पूछना चाहती हूं कि क्या पिछड़ापन हिन्दू प्रतीकों का अपमान करना सिखाता है। शिक्षकों के साथ मारपीट करना सिखाता है, आतंकवादी का बरसी मनाना सिखाता है।

— **प्रगति दूबे,** रांची (झारखंड)

ध्यातव्य हो कि पिछले कुछ दिनों से भारत के प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थान जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में अनेकों घटनाएं देखने को मिली जिसे सुनियोजित तरीके से छात्र आन्दोलन के माध्यम से किया गया। यह आन्दोलन पहले शुल्क दर में वृद्धि तथा परिसर से संबंधित अन्य समस्याओं पर आधारित था जिसमे छात्र आंदोलन के नाम पर शिक्षकों से दुर्व्यवहार करना तथा तोड़ फोड़ करना शामिल था। लेकिन लोकतंत्र के नाम पर सरकार के खिलाफ प्रदर्शन करते करते सरकार ये लोग भारत के गौरव को ठेस पहुंचा रहे हैं। जेएनयू के वामपंथी छात्रों द्वारा स्वामी विवेकानंद जी के प्रतिमूर्ति से छेड़खानी की गई,साथ ही मूर्ति के आस पास " भगवा जलेगा ", Fassism will die" तथा अन्य अभद्र गलियाँ लिखी गयी थी। स्वामी विवेकानंद भारत के युवाओं के आदर्श है ऐसे मे कुछ तथाकथित वामपंथी विचार के लोग मिल कर पूरे युवा वर्ग को कैसे अपमानित कर सकता है। एक्टिविज़्म के नाम पर दीवारों को गंदा किया जाना अशोभनीय है। मुझे आशा है की आरोपित गुंडो पर सरकार द्वारा उचित कारवाई की जाएगी।

— **प्रियांक पाठक,** एमसीए छात्र, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, दिल्ली

राष्ट्र की प्रगति एवं उन्नति में युवाओं का महत्वपूर्ण योगदान होता है। जेएनयू में जो कुछ हो रहा है वह नया नहीं है। याद कीजिए 2016 की घटना को, जिसमें अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर भारत तेरे टुकड़े होंगे के नारे लगाए गए। इसके बाद उनकी खूब चर्चा हुई और उन्हें राजनीतिक लाभ भी मिला। ये लोग उन्हीं चीजों से प्रेरित होकर इस तरह के कृत्य कर रहे हैं। किसी भी आंदोलन का उद्देश्य सकारात्मक होना चाहिए जिसे समाज एवं देश उन्नति की ओर अग्रसर हो सके। अपने व्यक्तिगत विचार के लिए किसी भी तरह का आंदोलन सकारात्मक नहीं हो सकता।

— **प्रशांत सिंह कश्यप,** नागपुर

विद्या ददाति विनयम... विद्या से विनय आती है, उसी विनय से सकारात्मक समाज का निर्माण होता है लेकिन जब विद्या ग्रहण करते हुए हिंसा का रास्ता अपनाया जाए तो यह विद्या का अपमान है। उस विद्या के आश्रम का अपमान है जहां विद्या ग्रहण की जाती है। लोकतांत्रिक देश में अधिकारों के लिए लड़ने से कोई मना नहीं करता लेकिन रास्ते भी सभ्य होना चाहिए। शिक्षकों पर तंज कसना, महापुरूषों के प्रतिमाओं का अपमान करना, दीवारों पर अपशब्द लिखना कहां तक उचित है। सभ्य समाज में इन सब चीजों का कोई स्थान नहीं होता।

— **गौरव रंजन,** शोधार्थी (केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार)

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

मनोहर सरकार
विकास अपार

आयुष्मान भारत के तहत लाभ देने वाला हरियाणा पहला राज्य

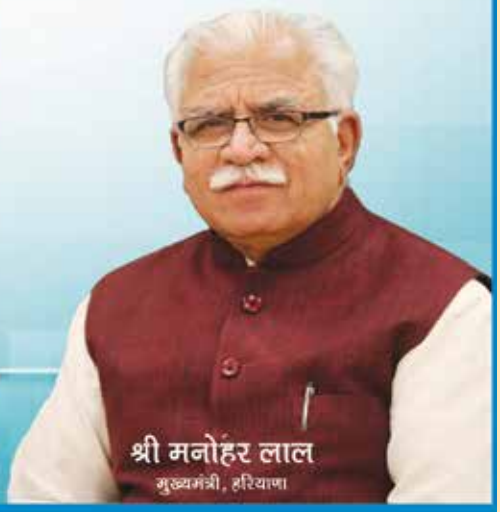

प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना

- प्रत्येक अधिकृत परिवार को सालाना 5 लाख रुपये तक की मुफ्त इलाज सुविधा
- यह सुविधा देश भर के सभी आयुष्मान अधिकृत अस्पतालों में उपलब्ध
- परिवार के सभी सदस्य योजना का लाभ ले सकते हैं

5 लाख रुपये तक नकद रहित उपचार

मौजूदा बीमारी की चिकित्सा भी इसमें शामिल

कोई नामांकन शुल्क या प्रीमियम नहीं

तकरीबन 1350 चिकित्सा पैकेज शामिल

सभी सामान्य व गम्भीर बीमारियों का खर्चा भी शामिल

योजना लाभार्थियों के लिए पूर्णतः निःशुल्क

अधिक जानकारी के लिए देखें
https://ayushmanbharatharyana.in

सूचना, जन सम्पर्क एवं भाषा विभाग, हरियाणा | www.prharyana.gov.in

RNI NO.: DELBIL/2017/73636
DATE OF POSTING: 10-11 NOVEMBER, 2019
DATE OF PUBLISHING: 8 NOVEMBER, 2019
POSTAL REGD. NO.: DL(C)-11/1409/2017-2019
POST OFFICE: NDGPO, NEW DELHI

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

मनोहर सरकार
विकास अपार

तेजी से गिर रहे भू-जल स्तर में
सुधार के लिए
सूक्ष्म सिंचाई परियोजना
बनाने वाला
हरियाणा देश
का
पहला राज्य

दक्षिण हरियाणा की नहरों में
39 वर्षों बाद
पहली बार पहुंचा टेल तक
पानी

सूचना, जन सम्पर्क एवं
भाषा विभाग, हरियाणा
www.prharyana.gov.in